विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष : 6 अंक : 23 सितंबर 2013

सरस्वती हिंदी पाठशाला की स्वर्ण जयंती

मॉरीशस के प्रधान मंत्री, माननीय डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम

सरस्वती हिंदी पाठशाला की स्वर्ण जयंती के अवसर पर रविवार 25 अगस्त, 2013 को कार्चिये मिलितेर के इंदिरा गांधी एस.एस.एस. में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम उपस्थित थे। शेष पृ. 6

हिंदी दिवस 2013

जमैका में हिंदी दिवस समारोह

मॉरीशस की सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्थाओं सहित भारत, ब्रुनेई दरुस्सलम, पोर्ट ब्लेयर, सिडने, वियतनाम, खौटेंग, पारामारिबो आदि देशों में हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह तथा पखवाड़ा मनाया गया। इन गतिविधियों से आपका परिचय करा रहा है विश्व हिंदी समाचार का यह नया अंक। शेष पृ. 2–3

नहीं रहे हिंदी विद्वान प्रो. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर

हिंदी भाषा व साहित्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान देने वाले हिंदी एवं संस्कृत के विद्वान प्रो. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर नहीं रहे। 19 अगस्त को उनका स्वर्गवास हो गया। प्रो. स्टुअर्ट मैकग्रेगर ने 'द ऑक्सफ़ोर्ड हिंदी-इंग्लिश डिक्शनरी' (1993), 'आउटलाइन ऑफ़ हिंदी ग्रामर विद एक्सरसाइज़ेज़' (1971), 'हिंदी लिटेरेचर ऑव द नाइनटींथ सेंचुरी ऐंड अर्ली ट्वेन्टीयथ सेंचुरी' (1974), आदि पुस्तकें व शोध-ग्रंथ लिखे जो हिंदी भाषा की अनमोल मोतियाँ हैं। शेष पृ. 11

अभिमन्यु अनत को साहित्य अकादेमी द्वारा मानद महत्तर सदस्यता का सर्वोच्च सम्मान

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध कथा-साहित्य सम्राट श्री अभिमन्यु अनत को भारतीय साहित्य में योगदान के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा मानद महत्तर सदस्यता (Honorary Fellowship) प्रदान की गई है।अभिमन्यु जी को औपचारिक रूप से मानद महत्तर सदस्यता प्रदान किए जाने का उपक्रम निकट भविष्य में किसी तिथि को विशेष समारोह आयोजित कर किया जाएगा। साहित्य अकादेमी ने यह सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हुए अभिमन्यु अनत जी को श्री वी.एस. नैपाल, श्री लेओपोल्ड सेदर सेंघोर, प्रो. ई. पेट्रोविच चेलिशेव, प्रो. डैनियल एच.एच. इंगल्स जैसे भारतेतर साहित्यकारों की श्रेणी में स्थान प्रदान किया है। शेष पृ. 5

मॉरीशस तथा दक्षिण अफ्रीका में हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी कार्यशाला

मॉरीशस

दक्षिण अफ़्रीका

विश्व हिंदी सचिवालय ने सोमवार 22 से गुरुवार 25 जुलाई 2013 तक मॉरीशस के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के लगभग 90 हिंदी शिक्षकों के लिए, मंगलवार 06 अगस्त, 2013 को मॉरीशस में लोंग माउटेन स्थित हिंदी प्रचारिणी सभा में हिंदी छात्रों के लिए तथा डर्बन, प्रिटोरिया एवं जोहानस्बर्ग में 27 जुलाई से 3 अगस्त, 2013 तक हिंदी शिक्षकों, हिंदी छात्रों तथा हिंदी अधिकारियों के लिए हिंदी शिक्षण, सूचना-संचार प्रौद्योगिकी कार्यशालाएँ आयोजित कीं। शेष पृ. 4–5

आगे पढ़ें :

- महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस द्वारा रियूनियन में हिंदी प्रशिक्षण - पृ 7
- यू.के. हिंदी समिति द्वारा हिंदी दिवस तथा 20वाँ अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन - पृ 8
- जापानी कॉमिक 'नीरव संध्या का शहर, साकुरा का दर्द' का हिंदी अनुवाद - पृ 9
- जेएन्यू में '1857 का महत्व' विषयक परिसंवाद और 'सुराज' नाटक की प्रस्तुति - पृ 11

हिंदी दिवस 2013: विश्व भर में

जम्मू

जम्मू के मे फ़ेयर स्कूल में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के निदेशक अभय बसूर ने हिंदी की आवश्यकता पर आधारित अपना संदेश दिया। उनके अनुसार हिंदी हमारे राष्ट्र की भाषा है और हर भारतीय की भाषा है। बच्चों में हिंदी लेखन की प्रतिभा को और भी निखारने के लिए लेखन प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई थीं जिनमें छात्रों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। प्राचार्य श्री रणजीत कौर ने सभी बच्चों को बधाई दी और भविष्य में भी ऐसे आयोजन करने का प्रस्ताव रखा।

साभार : earlytimesnews.com

ब्रुनेई दरुस्सलम

ब्रुनेई दरुस्सलम में भारतीय उच्चायोग ने बेलायत भारतीय संघ के सहयोग से हिंदी दिवस का आयोजन किया। हिंदी भाषा को भारत की आधिकारिक भाषा तथा विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में प्रतिष्ठा मिली है। श्री कुलदीप सिंह, प्रथम सचिव, भारतीय उच्चायोग के उद्घाटन संदेश से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कई बच्चों एवं अभिभावकों ने अनेक गतिविधियों तथा प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिनमें कविता, वक्तृता तथा गीत आदि शामिल थे।

साभार : borneobulletin.brunei-online.com

पोर्ट ब्लेयर

23 सितंबर 2013 से पोर्ट ब्लेयर स्थित 'आन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया रीज्योनल सेंटर' में हिंदी सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर पोर्ट ब्लेयर के दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक श्री आर. मोहन ने सप्ताह भर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का उद्घाटन किया जबकि उप निदेशक डॉ. एम. शशिकुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया। अपने संदेश में श्री मोहन ने हिंदी की सार्वदेशिक उपयोगिता एवं महत्व पर बल दिया। संस्था में हिंदी भाषियों के लिए एक विवाद कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। सप्ताह भर संस्था के कार्यकर्ताओं के मध्य अनेक हिंदी गतिविधियों का आयोजन हुआ तथा 27 सितंबर को समापन समारोह संपन्न हुआ।

साभार : http://www.andamanchronicle.net

सिलिगुड़ी, बंगाल

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय खाद्य निगम के ज़िला कार्यालय (सीएसडी-डाबग्राम) में 24 एवं 25 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इसमें विभागीय कर्मचारियों के बीच प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद, राजभाषा शब्द प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता आदि आयोजित हुए। अधिकारियों को विभागीय कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने हेतु पुरस्कृत किया गया। समापन समारोह में अतिथियों ने हिंदी प्रतियोगियों के अद्भुत हिंदी-प्रेम व हिंदी प्रतिभा की सराहना की। साथ ही साथ यह भी बताया गया कि हिंदी देश की न केवल संपर्क भाषा है वरन् प्रेम की भाषा है। भारतीय खाद्य निगम के ज़िला कार्यालय की राजभाषा अधिकारी वीणा एक्का के संचालन एवं सहायक धर्मेन्द्र साव के संयोजन में हुए इस समारोह में विभागीय कर्मचारियों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया।

साभार : www.jagran.com

सिडनी

सिडनी स्थित इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट्स सोसाइटी ने हिंदी दिवस का आयोजन बहुत ही धूमधाम से किया। इस वर्ष मुख्य विषय था 'हिंदी सिनेमा में काव्य और प्रेम'। संस्था द्वारा एप्पिंग के लैज़ियर एंड लर्निंग सेंटर में एक कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि थे कौंसलर अरुण गोयल, भारतीय विद्या भवन के श्री गंभिर, हिंदू काउंसिल ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया के प्रो. निहाल अगर, श्री गुरदीप सिंह, श्रीमती माला मेहता, श्रीमती निरुपमा वर्मा आदि। इलासा संस्था (इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट्स सोसाइटी) की अध्यक्षा रेखा राजवंशी ने सभी कवियों का परिचय दिया। कुल मिलाकर 16 कवियों ने इस कवि सम्मेलन में भाग लिया। ध्यातव्य है कि इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट्स सोसाइटी तीन वर्षों से कवि सम्मेलनों का आयोजन करते हुए भारतीय संस्कृति व हिंदी साहित्य का प्रचार-प्रसार करती आ रही है। ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बान, मेलबर्न, कानबेरा और वोल्लोंग जैसे शहरों में कई आयोजन किये जा चुके हैं।

साभार : www.theindiansun.com

जफ़ना, श्रीलंका

14 सितंबर को स्वयं हिंदी छात्र-छात्रों ने मिलकर जफ़ना में हिंदी दिवस का आयोजन किया। सभागार में उपस्थित अतिथियों की तादाद से ही उनके उत्साह और दिलचस्पी का अनुभव हुआ। छात्रों ने मिल-जुलकर कविता-वाचन, गीत आदि अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। एक ही अध्यापिका- श्रीमती करुणा के होते हुए भी बच्चों में हिंदी भाषा सीखने की इच्छा रही है। हिंदी फ़िल्मों और गानों को समझने के लिए भी बहुत लोग हिंदी सीख रहे हैं। श्रीलंका ब्रॉदकास्टिंग कारपोरेशन भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में पूरा योगदान दे रहा है। बहुत से लोग तो यू-ट्यूब के माध्यम से हिंदी गाने सुनते हैं। छात्र-छात्राएँ भारत में जाकर हिंदी की उच्च-शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। हर वर्ष अनेक विद्यार्थियों को भारत सरकार द्वारा छात्रवृत्ति भी मिलती है।

साभार : newindianexpress.com

वियतनाम

वियतनाम के हो चि मिन्ह शहर स्थित भारतीय दूतावास ने हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया जिसमें छात्रों और प्राध्यापकों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर उच्चायोग ने हिंदी पठन-पाठन को वियतनाम में अधिक सुलभ बनाने के लिए पूरा सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। यह आयोजन हो चि मिन्ह शहर केसमाज विज्ञान व मानविकी विश्वविद्यालय (University of Social Sciences and Humanities)में किया गया। प्राच्य विद्या संकाय की छात्राओं ने नृत्य प्रस्तुति की। इस अवसर पर उच्चायोग के डॉ. दीपक मित्तल ने बताया कि हिंदी भाषा के पठन-पाठन से

वियतनाम और भारत के बीच एकता और भाईचारा का रिश्ता सुदृढ़ होता जा रहा है। उन्होंने छात्रों को बधाई दी और कहा कि हिंदी भाषा जानने से ये छात्र भारत और वियतनाम के बीच एक बहुत ही मज़बूत कड़ी के रूप में उभर रहे हैं।

साभार : vietnambreakingnews.com

जमैका

14 सितंबर को जमैका स्थित भारतीय उच्चायोग में उच्चायुक्त प्रताप सिंह की अध्यक्षता में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महामहिम उच्चायुक्त ने अपने संदेश में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने नृत्य और प्रहसन प्रस्तुत किए। स्वयं महामहिम उच्चायुक्त ने हिंदी कविता प्रस्तुत की। इस आयोजन में हिंदी-भाषियों के साथ ही हिंदी को पसंद करने वाले अहिंदी भाषियों ने भी बढ़चढ़कर भाग लिया।

साभार : gallery.jamaica-gleaner.com

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह रंगारंग कार्यक्रमों से संपन्न हुआ। सितंबर 13 से 27 सितंबर तक विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में आयोजित हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह दिनांक 27 सितंबर को कुलपति महोदया प्रो.(डॉ.) जान्सी जेंस द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। उन्होंने अपने संदेश में बताया कि हिंदी के भारत और विदेशों में प्रचलित कई रूप हैं और भारत तथा अन्य देशों में सत्तर करोड़ से भी अधिक लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं और वह राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। उन्होंने विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी, कर्मचारी एवं उनके परिवार, अध्यापक व छात्र-छात्राओं को मंगलकामनाएँ व्यक्त की।

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो.(डॉ.) कटिटमणि ने कहा कि हिंदी में नए-नए प्रयोग तथा विदेशी शब्द-ग्रहण की क्षमता बढ़ रही है। इसके पश्चात विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक श्री वी. शशिधरन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। हिंदी विभाग के आचार्य प्रो.(डॉ.) विजयकुमारन द्वारा रचित 'भारत विभाजन परवर्ती वास्तविकता का हिंदी उपन्यासों में चित्रण' तथा डॉ. स्वप्ना कृत 'मूल्य विघटन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक युद्ध काव्यों का अध्ययन' पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

आयोजित गतिविधियों में कविता-पाठ, अनुवाद, श्रुतलेखन, हिंदी गीत, भाषण, हिंदी प्रश्नोत्तरी आदि शामिल थे जिनमें छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर छात्रों द्वारा नृत्य, गायन आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। धन्यवाद ज्ञापन प्रो.(डॉ.) विजयकुमारन ने दिया।

प्रस्तुति – प्रो.(डॉ.) विजयकुमारन.सी.पी.वी.
हिंदी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय

खौटेंग, दक्षिण अफ्रीका

14 सितंबर को हिंदी शिक्षा संघ के खौटेंग शाखा में संघ तथा भारतीय सांस्कृतिक संबद्ध परिषद के सहयोग से हिंदी दिवस 2013 का आयोजन किया गया जिसमें अनेक हिंदी स्कूलों ने भी अपना सहयोग दिया। इस अवसर पर सभी को हिंदी में ही बात करने की अनुमति थी। यह कार्यक्रम संस्था के प्रांगण में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उप उच्चायुक्त श्री चंगसन ऐम्स्ट्रंग तथा महावाणिज्य दूत श्री रणधीर जैसवाल ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री रणधीर ने हिंदी भाषा के इतिहास तथा 1949 में भारत की मानक भाषा के रूप में इसकी भूमिका पर बात की। श्री चंगसन ने हिंदी भाषा की सादगी और भारत में इसके अनेक रूपों पर नज़र दौड़ाया। उन्होंने कहा कि हिंदी के पठन-पाठन में दी जा रही सुविधाओं का लाभ अवश्य उठाना चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी हिंदी के अन्य भव्य कार्यक्रम आयोजित होते रहेंगे।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कविता सिंह तथा उनकी पुत्री सनम सिंह ने किया। स्प्रिंग्स तथा बेनोनी हिंदी पाठशालाओं के छात्रों द्वारा वैदिक मंत्र पढ़े गए तथा अमिटि इंटरनेश्नल स्कूल के छात्रों ने भारतीय राष्ट्र-गान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में हिंदी फ़िल्मी गीत, कविता पठन, नृत्य, वक्तृता आदि प्रस्तुत किए गए जो दर्शकों को बहुत पसंद आए।

खौटेंग हिंदी खबर से साभार

पारामारिबो, सूरीनाम

13 सितंबर को भारतीय सांस्कृतिक परिषद (भारतीय दूतावास) द्वारा हिंदी दिवस मनाया गया जिसमें सूरीनाम के अनेक ज़िलों (कोमाविना, निकेरी, सरमाका और वानिका) के हिंदी विद्यार्थियों और अध्यापक गण ने भाग लिया। इस अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात आई.सी.सी. के हिंदी विद्यार्थी मंडल के संपादन व हिंदी अध्यापिका कविता मालवीय के निर्देशन में 'सूरीनाम हलचन' नाम से एक हिंदी त्रैमासिक पत्र का लोकार्पण विशेष अतिथियों द्वारा किया गया जिनमें प्रमुख थे सूरीनाम हिंदी परिषद के अध्यक्ष श्री भोलानाथ नारायण, श्री राजन बलदेव, भारतीय दूतावास के श्री बी.के. तायल और श्री मणि आलागप्पा। त्रैमासिक पत्र में विद्यार्थियों की रचनाएँ प्रकाशित हैं। इस पत्र के प्रकाशन का लक्ष्य है सूरीनाम में हिंदी की विविध विधाओं के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति रुचि जागृत करना। पत्र के संपादन मंडल में शामिल हैं- जगदीश बीरे, मधु रामौतार, नीरज पल्तन तिवारी, रेणुष्का गंगाराम पाण्डे और शमीला रामरतन।

सौजन्य : कविता मालवीय

यॉर्क विश्वविद्यालय, यू.के.

22 सितंबर, 2013 को यॉर्क विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर भारतीय भाषा संगम द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात श्रीमती सुषमा मनीश ने सरस्वती वंदना की। भारतीय भाषा संगम के अध्यक्ष महेन्द्र वर्मा ने बरेली की सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती निर्मला सिंह का विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत किया। उन्होंने हिंदी दिवस के इतिहास एवं महत्व पर चर्चा की। चिकित्सक, कवि, चित्रकार, एवं अभिनेता डॉ. पुलक सहाय की अध्यक्षता में और श्रीमती उषा वर्मा के सफ़ल संचालन में कई नवोदित युवक तथा प्रतिष्ठित कवियों ने रचना पाठ किया। दुर्गा, गायत्री, ओजस, आदित्य, प्रिशा, वैशाली, सावित्री, द्रोण आदि कवियों की रचनाओं एवं गीता उपाध्याय के काव्य-नृत्य के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

महेंद्र वर्मा, पूर्व निदेशक,
हिंदी शिक्षण कार्यक्रम, यॉर्क, यू. के.

मॉरीशस

हिंदी संगठन द्वारा आयोजित हिंदी दिवस 2013

बाएँ से श्री चेतनदेव भगन, श्री राजीव रॉय श्री राजनारायण गति

कला एवं संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने, विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग से शनिवार 14 सितंबर 2013 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में, एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस वर्ष हिंदी दिवस, हमारे देश के हिंदी तपस्वी श्री जयनारायण राय को समर्पित किया गया। हिंदी सेवा कार्य की दिशा में, राय जी की भूमिका वंदनीय है। हिंदी भाषा शिक्षण की दिशा में दशकों से कार्य कर रही हिंदी प्रचारिणी सभा का कुशल नेतृत्व राय जी कोई 25 वर्षों तक करते रहे। परीक्षाओं का आयोजन, शिक्षक-प्रशिक्षण, विद्यालयों का विस्तार, स्थानीय व अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन व हिंदी दिवस आयोजन आदि की पहल के लिए, राय जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। अनेक लेखों, कहानियों, कविताओं की रचना के साथ-साथ, उन्होंने सन् 1941 में 'जीवन संगिनी' की रचना कर के नाटक विधा की नींव रखी।

श्री राय के सेवा–कार्यों पर प्रकाश डालने के लिए कार्यक्रम में एक वक्तव्य सम्मिलित किया गया। महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ व्याख्याता कुमारदत्त गुदारी जी ने बहुत ही समर्पित भाव से और परिश्रम के साथ वक्तव्य के साथ-साथ एक लघु वृत्त चित्र तैयार कर दिया। उपस्थित दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा प्रकाशित सुमन हिंदी पत्रिका के एक विशेषांक का भी विमोचन हुआ।

इस वर्ष हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वरिष्ठ साहित्याकार व इतिहासकार प्रह्लाद रामशरण जी को 'हिंदी सेवा सम्मान' प्रदान किया गया। रामशरण जी कई दशकों से साहित्य सृजन में लगे हुए हैं और उनकी कोई सत्तर तक कृतियाँ प्रकाश में आ चुकी हैं।

एक और कर्मठ सेवक, देवदत्त देबिया जी को भी सम्मानित किया गया। आप ने पूरा जीवन हिंदी शिक्षण व विद्यालय संचालन को समर्पित कर दिया। पेशे से आप हिंदी शिक्षक रहे हैं और कई समाओं व समितियों के स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाकर हिंदी भाषा व भारतीय संस्कृति की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनेक गणमान्य अतिथियों के अमूल्य संदेशों के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

राजनारायण गति,
प्रधान, हिंदी स्पीकिंग यूनियन

महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी सप्ताह

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के हिंदी विभाग में 2007 से चलती आ रही परंपरा के अनुरूप इस वर्ष भी हिंदी सप्ताह का आयोजन बड़े ही उत्साह के साथ किया गया। इस कार्यक्रम में हिंदी के साथ अन्य विभागों (उर्दू तथा दर्शन शास्त्र) के छात्रों की भी भागीदारी रही। कार्यक्रम के दौरान इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि छात्रों की हिंदी में मौखिक अभिव्यक्ति को विशेष अवसर मिले। उसके साथ-साथ उनकी रचनात्मकता एवं सृजनात्मक प्रतिभा को उभरने का भी सुअवसर मिला। संस्था में सप्ताह भर हिंदी का वातावरण छाया रहा।

हिंदी सप्ताह 9 सितंबर से 13 सितंबर 2013 तक मनाया गया। इस अवसर पर कविता लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर, नुक्कड़ नाटक तथा अंत्याक्षरी में भारी मात्रा में छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रमों की प्रस्तुति तथा निर्णायकों का कार्यभार प्राध्यापकों द्वारा संपन्न किया गया। इन गतिविधियों में खास तौर पर युवा-पीढ़ी का सहयोग रहा जिन्होंने जोश के साथ इनमें भाग लिया।

पुरस्कार वितरण समारोह 13 सितंबर, 2013 को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा वक्ता थे, भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी. सीताराम। मॉरीशस के अनेक गणमान्य अतिथियों ने संस्था के समागार में अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मंच पर आसीन थे महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री बिजय मधु, निदेशिका डॉ. वी. कुंजल तथा डॉ. के. सोरनम। हिंदी विभाग की अध्यक्षा ने सभी का स्वागत किया तथा कार्यक्रम की सहायता हेतु हिंदी विभाग तथा अन्य विभागों के सहयोगी प्राध्यापकों सहित सभी छात्रों को उनकी दिलचस्पी के लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद समर्पित किया।

महात्मा गांधी संस्थान ने तो विजेताओं को पुरस्कृत किया ही, साथ ही विश्व हिंदी सचिवालय ने भी इन पुरस्कारों में बीस हज़ार रुपये की अतिरिक्त राशि जोड़ दी। छात्रों ने अपने कार्यक्रमों की सूचना, प्रसार, चर्चा हेतु फ़ेसबुक का भी काफ़ी प्रयोग किया जो उनकी जागरूकता का प्रतीक है।

डॉ. अलका धनपत,
अध्यक्षा, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी कार्यशालाएँ (मॉरीशस व दक्षिण अफ़्रीका)

बाएँ से श्री बालेन्दु शर्मा, श्री गुलशन सुखलाल, श्री रामप्रकाश रामलगन, श्री अशोक कुमार, डॉ. उदय नारायण गंगू, श्री अविनाश उजोरा

हिंदी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए तथा हिंदी और आई.सी. टी. के क्षेत्र के नवीनतम उपलब्धियों और प्रौद्योगिकी के बारे में शिक्षकों व छात्रों को परिचित कराने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय ने इस वर्ष हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी पर 6 कार्यशालाओं का सफ़ल आयोजन किया। 2 कार्यशालाएं मॉरीशस में हुईं तथा 4 कार्यशालाएँ दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी शिक्षा संघ के सहयोग से हुई

कार्यशालाओं की विशेष उपलब्धि यह रही कि हिंदी के क्षेत्र और स्तर का विस्तार हो पाया तथा शिक्षण प्रणाली में नवीन उपकरणों के आविर्भाव के साथ हिंदी शिक्षण के अत्यधिक रोचक और सुगम बनने की दिशाएँ विस्तृत हुईं। लगभग 600 हिंदी शिक्षकों, छात्रों, अधिकारियों, हिंदी प्रेमियों को हिंदी तथा सूचना संचार प्रौद्योगिकी कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया, यही कार्यशाला की सफ़लता का सबसे बड़ा प्रतीक है।

कार्यशाला के संचालन के लिए भारत से सुप्रसिद्ध तकनीकविद् श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच को आमंत्रित किया गया। श्री बालेन्दु ने विशेष रूप से मॉरीशस एवं दक्षिण अफ़्रीका में आयोजित होने वाली कार्यशालाओं के लिए एक वर्चुअल हिंदी टाइपराइटर का निर्माण किया जिसे प्रतिभागियों के साथ साझा किया गया।

मॉरीशस

सरकारी माध्यमिक हिंदी शिक्षकों के लिए कार्यशाला

श्री रामप्रकाश रामलगन

सोमवार 22 से गुरुवार 25 जुलाई 2013 तक मॉरीशस के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के लगभग 100 से भी अधिक हिंदी शिक्षकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। मॉरीशस शिक्षा संस्थान (एम.आई.ई.), महात्मा गांधी संस्थान (एम.जी.आई.) और आर्य सभा, मॉरीशस के सहयोग से आयोजित यह कार्यशाला पाई स्थित डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज में लगी। यह कार्यशाला भारत से आए तकनीकविद् श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच, महात्मा गांधी संस्थान के भाषा संसाधन केन्द्र के अध्यक्ष श्री कुमारदत्त गुदारी, सेंटर फ़ॉर ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग के श्री अविनाश उजोरा और विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल द्वारा चलाई गई।

चार दिवसीय इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को युनीकोड, हिंदी टंकन, इंस्क्रिप्ट, टैक्नोपेडागोजी, इंटरैक्टीव डिजिटल बॉर्ड, शिक्षण सामग्री निर्माण तथा पावरपॉइंट, मूवी मेकर, साउंड एडिटर आदि के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही प्रतिभागियों को उनके लैपटॉप पर सोफ्टवेयर, टंकन सामग्री तथा अन्य फ्रीवेयर उपलब्ध कराए गए।

सोमवार 22 जुलाई 2013 को उद्घाटन समारोह के अवसर पर मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय के वरिष्ठ मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री रामप्रकाश रामलगन, भारतीय उप उच्चायुक्त श्री अशोक कुमार, डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज के डीन डॉ. उदय नारायण गंगू सहित श्री अविनाश उजोरा तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच ने हिंदी व सूचना-संचार प्रौद्योगिकी की नवीनतम प्रवृतियों पर एक प्रस्तुति की। श्री अविनाश उजोरा ने अपने संदेश में प्रौद्योगिकी की आवश्यकता पर बात की और कहा कि उनकी संस्था इस आयोजन में अपना पूरा सहयोग देगी। भारतीय उप उच्चायुक्त श्री अशोक कुमार ने सचिवालय को इस आयोजन के लिए बधाई दी और कहा कि भारत सरकार इसी तरह नियमित रूप से अपना सहयोग प्रदान करती रहेगी। मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय के वरिष्ठ मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री रामप्रकाश रामलगन ने भी सचिवालय सहित सभी प्रतिभागियों के प्रति शुभकामनाएँ व्यक्त की और बताया कि हिंदी भाषा को प्रौद्योगिकी से जोड़ना हिंदी सीखने वालों के लिए और स्वयं हिंदी के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। हिंदी शिक्षण को बेहतर बनाने में यह कार्यशाला अत्यंत आवश्यक है। उसके पश्चात् श्री रामलगन ने कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन किया। सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ आशा व्यक्त की कि इस कार्यशाला से शिक्षक गण अवश्य लाभान्वित होंगे। महात्मा गांधी संस्थान के भाषा संसाधन केन्द्र के अध्यक्ष श्री कुमारदत्त गुदारी ने मंच-संचालन किया।

चार दिनों तक चलने वाली कार्यशाला के अंतर्गत 'हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी : संभावनाएँ', 'टैक्नो-पेडागोजी : कक्षाओं में प्रौद्योगिकी कार्यान्वयन', 'हिंदी आपके कंप्यूटर पर', 'युनिकोड : इतिहास एवं प्रयोग', 'हिंदी शिक्षण के उन्नयन हेतु उपलब्ध

कार्यशाला के प्रतिभागी, मॉरीशस के सरकारी हिंदी शिक्षक

संसाधनों का प्रयोग', 'आई.सी.टी. आधारित शिक्षण सहायक सामग्री ', 'शैक्षणिक हिंदी वेबसाइट/ ब्लॉग निर्माण व प्रबंधन', 'सामाजिक नेटवर्किंग साइट तथा हिंदी ई-पत्रिकाओं का संपादन व प्रबंधन'सत्रों का आयोजन किया गया।

इन सत्रों के माध्यम से माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले अध्यापकों को प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर अधिक जानकारी मिली। विविध हिंदी प्रोग्राम, सॉफ्टवेयर, फ्रीवेयर, फोंट, ऐनिमेशन आदि कई औज़ारों की ओर शिक्षकों का ध्यान आकृष्ट किया गया। हिंदी टंकन में युनिकोड के महत्व को उजागर किया गया तथा प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी शिक्षण को सृजनात्मक रूप से विद्यार्थियों के लिए रुचिकर व रोचक बनाने के माध्यम से अवगत कराया गया। हिंदी ब्लॉग निर्माण पर भी शिक्षकों को अधिक जानकारी दी गई। शिक्षकों को एक ही मंच पर जोड़ने वाले हिंदी ब्लॉग का विचार भी सामने आया। सामाजिक नेटवर्किंग साइट तथा हिंदी ई-पत्रिकाओं के संपादन व प्रबंधन की प्रक्रिया व नियम भी सिखाए गए। ऑडियो-विडियो रिकॉर्डिंग एवं संपादन, डबिंग, उपशीर्षक लगाना जैसे विषयों पर प्रस्तुति हुई। प्रशिक्षण को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए शिक्षकों के लिए अभ्यास सत्र भी चलाए गए।

कार्यशाला के दौरान शिक्षकों को मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा चलाई जाने वाली साँकोरे परियोजना से परिचित कराया गया। साँकोरे परियोजना का उद्देश्य मॉरीशस की शिक्षा प्रणाली में सूचना-संचार प्रौद्योगिकी को स्थापित करना है। इस परियोजना के तहत पाठशालाओं में इंटरैक्टीव बोर्ड इत्यादि नवीनतम उपकरणों की व्यवस्था की गई है। एम.आई.ई. के सौजन्य में, श्री अविनाश उजोरा एवं उनके सहयोगियों के निर्देशन में कक्षा प्रौद्योगिकी एवं ई-प्लैटफ़ॉर्म से परिचय कराने हेतु कक्षाओं में उपलब्ध इंटरैक्टीव बोर्ड पर कार्यशाला के प्रतिभागियों का हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण भी हुआ। विशेष बात यह रही कि कार्यशाला के ये प्रतिभागी शिक्षक इंटरैक्टीव बोर्ड के प्रयोग का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले मॉरीशस के प्रथम माध्यमिक शिक्षक बने।

कार्यशाला के समापन समारोह में डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज के डीन डॉ. उदय नारायण गंगू भी उपस्थित थे। सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री सुखलाल ने विशेषज्ञ श्री बालेन्दु को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस कार्यशाला की सफ़लता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई साथ ही श्री अविनाश उजोरा व श्री कुमारदत्त गुदारी के प्रति आभार प्रकट किया। सभी प्रतिभागियों को उनकी भागिदारी के लिए धन्यवाद समर्पित करते हुए कार्यशाला से उपलब्ध ज्ञान को शिक्षण प्रणाली में लागू करने की प्रेरणा भी दी गई। प्रमाण पत्र वितरण के साथ ही कार्यशाला संपन्न हुई।

हिंदी प्रचारिणी सभा के छात्रों व अधिकारियों के लिए कार्यशाला

विश्व हिंदी सचिवालय ने मंगलवार 06 अगस्त, 2013 को मॉरीशस में लोंग माउँटेन स्थित हिंदी प्रचारिणी सभा के हिंदी छात्रों व अधिकारियों के लिए हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का संचालन भी सचिवालय द्वारा भारत से आमंत्रित तकनीकविद् श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच ने किया।

कार्यक्रम का श्री गणेश करते हुए सभा के सचिव श्री धनराज शंभु ने स्वागत भाषण दिया। इसके पश्चात् सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना के इतिहास पर नज़र दौड़ाते हुए उसके विभिन्न गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। इसके साथ ही उन्होंने वर्तमान समय में इंटरनेट के महत्व तथा इसके माध्यम से शिक्षण व भाषा के प्रचार-प्रसार पर बल दिया। सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव ने सभी का स्वागत करते हुए इस कार्यशाला की पृष्ठभूमि बाँधी और नई पीढ़ी को अपनी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने छात्रों को विश्व हिंदी सचिवालय के बारे में, उसके उद्देश्यों तथा कार्यों पर जानकारी देते हुए श्री बालेन्दु का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

श्री बालेन्दु ने पावरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से कार्यशाला की शुरूआत की। उन्होंने सर्वप्रथम छात्रों को यह बताया कि उनके ही कंप्यूटर और मोबाइल में पहले से ही हिंदी भाषा उपस्थित है। इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। फिर उन्होंने अनेक हिंदी सॉफ्टवेयर पर जानकारी दी जिनसे कम्प्यूटर में हिंदी के माध्यम से अनेक कार्य आसानी से किए जा सकते हैं। इनमें मंत्रा, गूगल ट्रैन्स्लेट, गिरगिट, अनुसारक, हिंदी ओ.सी.आर., श्रुतलेखन, वाचांतर, आदि शामिल थे। श्री बालेन्दु ने उदाहरण सहित इन ऐप्लिकेशनों के बारे में जानकारी दी जिससे विषय और भी रोचक बना।

कार्यशाला के अंतर्गत सभी प्रतिभागियों को अपने-अपने लैपटॉप पर उपलब्ध हिंदी भाषा को एक्टीवेट करने की विधि तथा हिंदी इंस्क्रिप्ट टंकण सिखाया गया। सचिवालय की कार्यशालाओं के लिए श्री बालेन्दु द्वारा विशेष रूप से निर्मित वर्चुअल हिंदी टाइपराइटर पर सभी प्रतिभागियों ने हिंदी टंकण सीखा। अक्षर से शब्द, शब्द से वाक्य और वाक्य से अनुच्छेद हिंदी में टंकित हुए। सभा के छात्रों के साथ-साथ हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यन्तुदेव बुधू, सचिव श्री धनराज शम्भु, वरिष्ठ अध्यापक गण, अधिकारियों व सदस्यों ने उत्साह के साथ इस कार्यशाला में भाग लिया।

अंत में श्री शंभु ने श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच तथा मुख्य रूप से विश्व हिंदी सचिवालय को धन्यवाद समर्पित किया जिनके सहयोग से यह कार्यशाला संपन्न हुई।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

दक्षिण अफ्रीका में हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी कार्यशाला

डरबन में आयोजित कार्यशाला

दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में सूचना संचार प्रौद्योगिकी के महत्व को उजागर किया गया। इसी बात से प्रेरित होकर हिंदी शिक्षा संघ ने विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के तत्वावधान में दक्षिण अफ्रीका के हिंदी प्रेमियों के लिए आईसीटी कार्यशाला का आयोजन किया।

4 कार्यशालाओं का आयोजन डर्बन, प्रिटोरिया एवं जोहानस्बर्ग में 27 जुलाई से 3 अगस्त, 2013 तक हुईं जिनमें 200 से भी अधिक हिंदी शिक्षकों, हिंदी छात्रों, हिंदी अधिकारियों, हिंदी प्रेमियों, भारतीय मूल के नागरिकों, विदेशियों व स्थानीय नागरिकों ने भाग लिया। कार्यशाला के संचालन के लिए विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल तथा भारत से प्रसिद्ध तकनीकविद् श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच ने दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की।

27 से 28 जुलाई तक डर्बन स्थित हिंदी शिक्षा संघ के कार्यालय में आयोजित कार्यशाला में प्रतिभागियों को युनीकोड, हिंदी टंकन, इंस्क्रिप्ट, शिक्षण सामग्री निर्माण तथा पावरपोइंट, ब्लॉग निर्माण, सोशल नेटवर्किंग आदि के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया गया। हिंदी शिक्षा संघ के अतिरिक्त संघ की इमारत में स्थित हिंदी रेडियो चैनल हिंदवाणी के अधिकारियों को भी कार्यशाला में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। एक 14 वर्षीय विद्यार्थी ने कार्यशाला में भाग लेने के पश्चात् खुद का अपना एक हिंदी ब्लॉग भी निर्मित किया।

गौटेंग में आयोजित कार्यशाला

डर्बन के बाद हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी का अभियान गौटेंग प्रदेश में पहुँचा जहाँ प्रिटोरिया हिंदू स्कूल के छात्रों और उसके बाद लेनेशिया में श्री भारत शारदा मंदिर के छात्रों को हिंदी और उनके कंप्यूटर के बीच संबंध से अवगत कराया गया तथा सरल रूप से उनको हिंदी टंकन का पहला अनुभव कराया गया। पहली बार देवनागरी में स्वयं अपना नाम टंकित करते हुए उन बच्चों के मुख पर जो चमक आई वह अभियान के सबसे सुंदर अनुभवों में गिना जा सकता है।

अंतिम कार्यशाला जोहानस्बर्ग में 3 अगस्त को भारतीय दूतावास के कार्यालय में लगी। इस कार्यशाला में दक्षिण अफ्रीका के हिंदी-भाषी, प्रवासी भारतीय तथा दक्षिण अफ्रीकी लोग अलग-अलग इलाकों से भाग लेने के लिए आए हुए थे। इस कार्यशाला में तीन सत्र रखे गए थे - कंप्यूटर पर हिंदी फोंट्स, चिट्ठा तथा सोशल मीडिया। संघ के सदस्यों ने हिंदी शिक्षा संघ को फ़ेसबुक तथा चिट्ठा में प्रवेश कराने का निर्णय लिया। इसके साथ ही सामूहिक रूप से प्रतिभागियों ने शिक्षण सामग्री, एडिटिंग तकनीक तथा प्रस्तुतीकरण आदि पर गंभीरतापूर्वक काम किया।

इस कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से प्रमाण पत्र तथा हिंदी फ़ोंट एवं अन्य हिंदी सोफ्टवेयर की सीडी प्रदान किए गए ताकि भविष्य में वे हिंदी टंकण कर सकें। हिंदी शिक्षा संघ के सदस्यों तथा सभी प्रतिभागियों ने श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच एवं श्री गुलशन सुखलाल को हृदय की गहराई से धन्यवाद समर्पित किया जिन्होंने हिंदी भाषा के दूत बनकर दक्षिण अफ्रीका में आकर प्रौद्योगिकी द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार में ऐतिहासिक योगदान दिया। सभी ने यह प्रस्ताव रखा कि अगली बार फिर से ऐसी कार्यशालाएँ दक्षिण अफ्रीका में आयोजित हों ताकि अधिक हिंदी-प्रेमी इनसे लाभ उठा सकें तथा हिंदी के क्षेत्र का विकास हो पाए।

श्री हीरालाल शिवनाथ,
संयुक्त क्षेत्रीय निदेशक,
हिंदी शिक्षा संघ, गौटेंग, दक्षिण अफ्रीका

अभिमन्यु अनत को साहित्य अकादेमी द्वारा मानद महत्तर सदस्यता का सर्वोच्च सम्मान

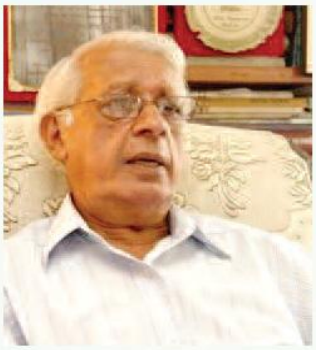

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध कथा-साहित्य सम्राट श्री अभिमन्यु अनत को भारतीय साहित्य में योगदान के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा मानद महत्तर सदस्यता (Honorary Fellowship) प्रदान की गई है।

एक राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था के रूप में साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार द्वारा 1952 में की गई थी। यह भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था है, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना है।

अकादेमी द्वारा भारतीय साहित्यकारों को प्रदान किया जाने वाला 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' भारत में दिए जाने वाले सर्वोच्च साहित्यिक सम्मानों में से है। इसके अतिरिक्त साहित्य अकादेमी किसी लेखक का सर्वोच्च सम्मान उसे अपना महत्तर सदस्य चुनकर करती है। यह सम्मान विशिष्ट साहित्यकारों के लिए सुरक्षित है और एक समय में 21 महत्तर सदस्य हो सकते हैं। अकादेमी के संविधान में श्रेष्ठ विदेशी लेखकों में से अकादेमी के मानद महत्तर सदस्यों के निर्वाचन के प्रावधान के तहत अकादेमी ने 23 अगस्त 2013 को चेन्नै, भारत में अपने परिषद की बैठक में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव द्वारा प्रेषित पत्र में कहा गया है कि श्री अभिमन्यु अनत को 'सम्मानित करते हुए साहित्य अकादेमी स्वयं सम्मानित हो रही है।'

यह सम्मान भारतीय हिंदी साहित्य को अपने योगदान के लिए दिया गया है और इसके माध्यम से भारत से बाहर हिंदी साहित्य के उस महासागर को गौरवांवित किया गया है जिसके सर्वाधिक प्रकाशमान मोती निस्संदेह अभिमन्यु अनत ही हैं। प्रवासी अथवा विदेशी हिंदी साहित्य नाम से संबोधित परंतु वास्तव में विश्व हिंदी साहित्य के इस रचनासंसार के लिए अभिमन्यु जी की लेखनी ने अत्यंत गौरवशाली प्रतिमान स्थापित किए हैं। उन्होंने हिंदी शिक्षण, रंगमंच, हिंदी प्रकाशन आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य किए हैं और लाल पसीना, लहरों की बेटी, एक बीघा प्यार, गांधी बोले थे आदि उपन्यासों, कैक्टस के दाँत, गुलमोहर खौल उठा आदि कविता संग्रहों तथा अपने संपादकीय व अन्य लेखों के माध्यम से गत 50 वर्षों से हिंदी साहित्य को एक वैश्विक पहचान देने के लिए प्रयासरत रहे हैं।

अभिमन्यु अनत को अपनी साहित्य सेवा के लिए इससे पूर्व भारत, मॉरीशस और विश्व स्तर पर अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, यशपाल पुरस्कार, जनसंस्कृति सम्मान तथा उ.प्र. हिंदी संस्थान पुरस्कार, अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा डॉ. होनोरिस कौज़ा के अतिरिक्त मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय ने मार्च 2013 में मॉरीशसीय हिंदी साहित्य शताब्दी समारोह के अंतर्गत अभिमन्यु जी को विशेष सम्मान प्रदान किया था। आज अभिमन्यु जी का साहित्य अनेक विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम की शोभा बढ़ा रहा है तथा उनकी रचनाओं पर अनेक शोधकार्य किए जा चुके हैं। उनकी रचनाओं का अनुवाद अंग्रेज़ी, फ्रेंच सहित अनेक भाषाओं में किया गया है।

साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता अभिमन्यु अनत जी के लेखन को प्राप्त सर्वोच्च मान्यता के रूप में माना जा सकता है। साहित्य अकादेमी ने यह सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हुए अभिमन्यु अनत जी को श्री वी.एस. नैपाल, श्री लेओपोल्ड सेदर सेंघोर, प्रो. ई. पेट्रोविच चेलिशेव, प्रो. डैनियल एच.एच. इंगल्स जैसे भारतेतर साहित्यकारों की श्रेणी में स्थान प्रदान किया है।

अभिमन्यु जी को औपचारिक रूप से मानद महत्तर सदस्यता प्रदान किए जाने का उपक्रम निकट भविष्य में किसी तिथि को विशेष समारोह आयोजित कर किया जाएगा। इसके अंतर्गत लेखक को ताम्रफलक युक्त मंजूषा प्रदान की जाएगी।

मॉरीशस व विश्व हिंदी समाज की ओर से श्री अभिमन्यु अनत को इस सम्मान के लिए कोटि-कोटि बधाई एवं शुभकामनाएँ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

सरस्वती हिंदी पाठशाला की स्वर्ण जयंती समारोह

मॉरीशस के प्रधान मंत्री, माननीय डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम

सरस्वती हिंदी पाठशाला की स्वर्ण जयंती के अवसर पर रविवार 25 अगस्त, 2013 को कार्चिये मिलितेर के इंदिरा गांधी एस.एस.एस. में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम ने कहा "मैं वादा करता हूँ कि मॉरीशस से हम हर संभव कोशिश करेंगे ताकि हिंदी भाषा संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा बन सके।... संस्कृत एक बहुत मूल्यवान भाषा है जिसकी तुलना किसी और से नहीं की जा सकती, इसीलिए मैं 'संस्कृत स्पीकिंग यूनियन' का गठन करूँगा।" उन्होंने संस्था को बधाई देते हुए भारतीय भाषा और भारतीय संस्कृति की रक्षा पर अधिकाधिक बल देने को कहा। उन्होंने संकेत किया कि हिंदी भाषा सभी को एक सूत्र में बाँधकर रखती है और सभी के चरित्र-निर्माण में सहायक सिद्ध होती है। हिंदी साहित्य के महान कवियों एवं लेखकों का उदाहरण दिया। साथ में उन्होंने हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए कार्यों के प्रति आभार प्रकट किया जिनकी बदौलत हिंदी भाषा बैठकाओं से निकलकर आज विश्वविद्यालयों तक पहुँच पाई है। अंत में उन्होंने ज़ोर दिया कि हमें अपने धर्म-संस्कृति एवं भाषा की रक्षा के लिए हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए और मॉरीशस में एकता को बनाए रखने के लिए अपना पूरा सहयोग देना चाहिए।

कार्यक्रम में प्रार्थना, दीप प्रज्ज्वलन, हिंदी गीत, कविता पाठ, नाटक और पुरस्कार वितरण किये गए। इस अवसर पर कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था जिनके विजेताओं को मुख्य अतिथि प्रधान मंत्री के करकमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। उसी अवसर पर पाठशाला के तीन संस्थापक-अध्यापक – श्री देवननंद हेमराज, सुभाषचंद्र दुखन और जयनारायण सुकन को भी सम्मानित किया गया। इन्होंने फ़रवरी 1963 को कॉंतोरेल में पाठशाला की स्थापना की थी जो बाद में कार्चिये मिलितेर में स्थानान्तरित हुई। सौभाग्य से वे आज तक हिंदी की सेवा में संलग्न हैं। मंत्री सुरेन्द्र दयाल ने उस अवसर पर अपना संदेश विद्या और उसके महत्व पर केन्द्रित किया और आयोजकों तथा संस्थापकों के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर प्रधान मंत्री के हाथों पाठशाला की स्वर्ण जयंति के अवसर पर एक स्मारिका का लोकार्पण हुआ जिसमें पाठशाला के छात्रों एवं अध्यापकों की रचनाएँ सम्मिलित हैं। पत्रिका का संपादन श्री धनराज शंभु ने किया।

मॉरीशस के प्रधान मंत्री के हाथों स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्य में प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण

कार्यक्रम का दूसरा सत्र बहुत ही महत्वपूर्ण एवं गंभीर विषय पर आधारित था। इस विचार गोष्ठी का विषय था 'हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ तक कैसे पहुँचाया जाए।' इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. माधुरी रामधारी ने की। उन्होंने हिंदी भाषा पर एक सारगर्भित भूमिका बाँधी और हरेक प्रतिभागी का परिचय दिया। इस विषय पर बोलने के लिए संस्था ने देश के श्रेष्ठ एवं कर्मठ लोगों को आमंत्रित किया था। उनमें महात्मा गांधी संस्थान की ओर से श्री कुमारदत्त गुदारी, अध्यक्ष, भाषा संसाधन केन्द्र, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉपरेशन के श्री केशन बधु, सरकारी हिंदी अध्यापक संघ के प्रधान श्री सत्यदेव टेंगर, हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधू और हिंदी संगठन की महासचिव श्रीमती अंजू घरभरण शामिल थे।

श्री यंतुदेव बुधू ने हिंदी भाषा की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए प्रौद्योगिकी एवं नए तकनीकों के प्रभाव पर भी बात की। श्री सत्यदेव टेंगर ने हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति को सामने रखा। उन्होंने बताया कि सरकार की अपनी कोशिश होगी लेकिन हमें निजी कंपनियों तथा व्यक्तिगत हिंदी प्रेमियों और हितैषियों के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। श्रीमती अंजू घरभरण ने संकेत किया कि आज हिंदी भाषा विश्व-विख्यात है। प्रौद्योगिकी भी अब हिंदी से जुड़ गई है। श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने बताया कि हिंदी के रूप भी अनेक हैं और हमें आज के परिवेश को समझकर उसके अनुसार हिंदी भाषा के पक्ष में कार्य करना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि हिंदी पढ़ने-पढ़ाने और बोलने के लिए धोती-कुर्ते ही धारण करने चाहिए। विश्व के सामने उनकी माँग के अनुसार ही इस भाषा को सामने रखना होगा और इसके पक्ष में कार्य करना होगा। श्री कुमारदत्त गुदारी ने भी युवा पीढ़ी के दम पर भाषा के प्रभाव एवं लाभ पर विशेष बल दिया। उन्होंने इस भाषा से संबंधित हर वयक्ति के अपने कर्त्तव्य की ओर संकेत किया। श्री केशन बधु ने मीडिया से संबंधित बातों पर प्रकाश डाला।

अंत में श्री धनराज शंभू ने धन्यवाद ज्ञापन किया और इस सफ़ल आयोजन के लिए सभी सहयोगियों और संस्थाओं को आभार व्यक्त किया।

श्री धनराज शंभु की रिपोर्ट

'गुलाब हैं राख... राख हैं गुलाब' का लोकार्पण

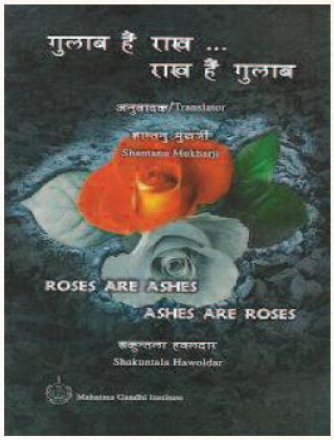

मॉरीशस के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शान्तनु मुखर्जी द्वारा अनूदित मॉरीशस की प्रतिष्ठापित अंग्रेज़ी कवयित्री श्रीमती शकुन्तला हवलदार की कृति 'Roses are Ashes & Ashes are Roses' के हिंदी अनुवाद 'गुलाब हैं राख... राख हैं गुलाब' का लोकार्पण समारोह 19 जुलाई, 2013 को मॉरीशस स्थित राजीव गांधी विज्ञान केन्द्र में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग सहित उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. राजेश्वर जीता, कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुखेश्वर चुनी तथा भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी. सीताराम उपस्थित थे।

राष्ट्रपति ने अपने संदेश में श्रीमती शकुन्तला हवलदार को आभार व्यक्त किया और श्री शान्तनु मुखर्जी की इस अनूदित रचना के लिए बधाई दी। महामहिम राष्ट्रपति ने बताया कि कविता का अनुवाद करना बहुत ही जटिल प्रक्रिया है, परंतु इस कृति को देखकर यह कहना गलत न होगा कि अनुवाद कार्य को शान्तनु जी ने बखूबी निभाया है। अंग्रेज़ी संस्करण में उपलब्ध कविताओं की गहनता हिंदी संस्करण में भी समान है। उन्होंने जोड़ा कि ये कविताएँ फूलों की मधुर सुगंध के समान हैं। ये हमें अपने मन की गहराइयों तक ले जाती हैं जहाँ मानवीय भावनाएँ और विचार अंकुरित होते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह रचना हिंदी प्रेमियों को अवश्य पसंद आएगी।

इसके पश्चात महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, श्रीमती शकुन्तला हवलदार, श्री शान्तनु मुखर्जी तथा अन्य अतिथियों द्वारा 'गुलाब हैं राख... राख हैं गुलाब' का लोकार्पण किया गया। मंच संचालन विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल ने किया। यह रचना एक टोली के सामूहिक परिश्रम के फलस्वरूप संभव हो पाई है। इसमें लेखिका, अनुवादक और विशेषकर महात्मा गांधी संस्थान तथा विश्व हिंदी सचिवालय का सहयोग रहा है।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

7वां अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन संपन्न

सृजनगाथा डॉट कॉम ने हिंदी की सृजनगाथा में अनेक संस्थाओं को सहयोगी संस्था के रूप में शामिल करके उद्देश्यों एवं कार्यों को गति दी है तथा सामूहिक प्रयासों को सफ़लता के लक्ष्य तक पहुँचाया है। चर्चित साहित्यिक पत्रिका 'आधुनिक साहित्य' नई दिल्ली, वीणा कैसेट्स जयपुर, प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान रायपुर, लोकसेवा संस्थान रायपुर तथा दैनिक उजाला भारत बाडमेर ने सातवें अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन (14-24 जून, 2013, कम्बोडिया-वियतनाम-थाईलैंड) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सम्मेलन का उद्घाटन दिनांक 17 जून, 2013 को कम्बोडिया के ऐतिहासिक शहर सेम रिप के होटल पैसेफिक के भव्य सभागार में शुरू हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. अमर सिंह राठौर मंच पर शोभायमान थे, वहीं अध्यक्षता मुंबई से आईं साहित्यकार श्रीमती संतोष श्रीवास्तव ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में रायपुर से आए राजा समुद्र सिंह, राजस्थानी गीतकार श्री कल्याण सिंह राजावत, पत्रकार-कवि राकेश अचल, उत्तराखण्ड भाषा संस्थान की निदेशिका डॉ. सविता मोहन एवं दिल्ली से पधारीं कवयित्री-चित्रकार श्रीमती संगीता गुप्ता भी मंच पर मौजूद थीं। कार्यक्रम का संचालन कवि एवं आधुनिक साहित्य के संपादक आशीष कंधवे ने बड़ी कुशलता से किया। मुख्य अतिथि डॉ. अमर सिंह राठौर तथा वरिष्ठ हिंदी सेवी राजा समुद्र सिंह ने भी सृजनगाथा डॉट कॉम के द्वारा किए जा रहे प्रयासों को गति देने के लिए आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही डॉ. संतोष श्रीवास्तव ने कहा कि सृजनगाथा एवं सभी संस्थाएँ जो इस कार्यक्रम में सहयोग कर रही हैं, वे अपने-अपने प्रांत की अग्रणी संस्थाएँ हैं। बिना किसी सरकारी अनुदान अथवा सहयोग के इन सभी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं।

उद्घाटन सत्र में कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ जिनमें मुख्य रूप से हिंदी का सामर्थ्य-आलेख संग्रह (संपादक- जयप्रकाश मानस एवं आशीष कंधवे), बारह सत्ते चैरासी- काव्य संग्रह (संपादक- आशीष कंधवे), नीले पानियों की शायराना हरारत- संस्मरण (संतोष श्रीवास्तव), मेरी प्रिय कहानियाँ- कहानी संग्रह (हेमचन्द्र सकलानी), कुंहासे के बाद- कविता संग्रह (डॉ. कल्पना वर्मा), आधुनिक साहित्य- सितंबर 2013 अंक (संपादक- आशीष कंधवे), समिधा- कहानी संग्रह (उदयवीर सिंह), सच बोलने की सज़ा- कविता संग्रह (डॉ. सुनील जाधव), आदि शामिल थे।

भूमण्डलीकरण और हिंदी विषय को लेकर द्वितीय सत्र में मुख्य अतिथि डॉ.हरीश नवल उपस्थित थे जिसकी अध्यक्षता बिकानेर से आए हिंदी के विद्वान श्री देवकृष्ण राजपुरोहित ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती अजीत गुप्ता, स्वामी शिवज्योतिषानंद, प्रवासी संसार के संपादक श्री राकेश पाण्डेय एवं श्री सुशील कुमार गुप्ता भी मंच पर उपस्थित थे। संचालन इलाहबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनुपम आनंद ने किया।

डॉ. हरीश नवल ने कहा कि भाषा और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भाषा बचेगी तो संस्कृति संरक्षित रहेगी और संस्कृति संरक्षित रहेगी तो भाषा बचेगी। ज़रूरत दोनों को बचाने की है जिसकी बागडोर युवाओं के हाथों में है।

तृतीय सत्र का आरंभ दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों से हुआ। जयपुर की जानीमानी नृत्य-निर्देशक श्रीमती चित्रा जांगिड़ द्वारा प्रस्तुत राजस्थानी लोकनृत्य और छत्तीसगढ़ की कलाकार ममता अहार द्वारा प्रस्तुत मीरा पर अभिकेन्द्रित एक नृत्य नाटिका ने सबका मन मोह लिया। श्री अरविंद मिश्र और अहफाज रशीद के कुशल संचालन ने इस सांस्कृतिक सत्र को विशेष बना दिया।

चतुर्थ सत्र अंतर्राष्ट्रीय रचना पाठ का सत्र था। वरिष्ठ गीतकार श्री कल्याण सिंह राजावत इस सत्र के मुख्य अतिथि थे वहीं वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार कर्नल रतन जांगिड़ कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे। प्रमिला वर्मा, हेमचन्द्र सकलानी, मृदुला झा, उदयवीर सिंह, कृष्ण नागपाल और कर्नल रतन जांगिड़ ने अपनी-अपनी कहानी का पाठ किया। इसके अतिरिक्त व्यंग्य पाठ और कविता पाठ हुआ।

पंचम और अंतिम सत्र अलंकरण की अध्यक्षता रायपुर-छत्तीसगढ़ से आए राजा समुद्र सिंह ने किया तथा विख्यात संगीतकार कल्याण सेन मुख्य अतिथि थे। मंच पर श्री अमर सिंह राठौर, हरीश नवल, संतोष श्रीवास्तव, सविता मोहन, देवकृष्ण राजपुरोहित, राजेश आनदेव तथा उमेश पाण्डेय मौजूद थे। श्री चंद्रकांत मिशाल तथा चेतना भारद्वाज ने संचालन किया। इस सत्र में सभी प्रतिभागियों को स्मृतिचिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस सत्र में सभी प्रतिभागी रचनाकारों को प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान की पहल पर 'प्रमोद वर्मा सम्मान' से विभूषित किया गया।

यात्रा को रोमांचक बनाने के लिए थाइलैंड, कम्बोडिया और वियतनाम के लगभग सभी महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का भ्रमण भी शामिल किया गया था। समग्रता में कहें तो यह यात्रा साहित्यिक रूप से समृद्ध तो थी ही, सांस्कृतिक पर्यटन के दृष्टिकोण से भी अत्यंत सफ़ल रही।

सृजन-सम्मान व सृजन गाथा डॉट कॉम द्वारा यह भी घोषणा की गई कि सात अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों के सफ़लतापूर्वक आयोजन के पश्चात् 8 वाँ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन मास्को एवं सैंट पीट्सबर्ग (रूस) में 11 अप्रैल 2014 से किया जाएगा जो समाजवादी दर्शन के जनक कार्ल मार्क्स और लेनिन को समर्पित होगा।

आशीष कंधवे की रिपोर्ट

महात्मा गांधी संस्थान द्वारा रियूनियन में हिंदी प्रशिक्षण

महात्मा गांधी संस्थान ने 22 जुलाई एवं 17 अगस्त 2013 के बीच सें-देनी में, हिंदी के भावी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया। प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन सें-देनी नगरपालिका के महापौर (मेयर) श्री ज़िल्बेर आनेत द्वारा किया गया। नगरपालिका के उच्चाधिकारी श्री ज़ां लूक स्नेडर एवं श्रीमती हेलन जुफो ने भी इस उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई।

नगरपालिका के सभागार में ही प्रशिक्षण की कक्षाएँ लगीं। प्रौद्योगिकी उपकरणों का आश्रय लेते हुए, फ्रेंच भाषा के माध्यम से विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की विधियों का ज्ञान प्रदान किया गया। जिन प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया गया, वे न केवल अलग-अलग भाषिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के थे, अपितु उनकी हिंदी में प्रशिक्षण पाने की प्रेरणा भी विभिन्न कारणों से थी।

प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए रियूनियन के हिंदी शिक्षक

फ्रांसीसी नागरिक ज़ां लूक गाद्फ्रुआ का फ्रांस निवासी पॉन्डिचेरी कन्या के साथ विवाह, उसे हिंदी प्रेमी एवं प्रचारक बनने का अभिलाषी बना रखा था जब कि गुजराती मूल की तीसरी पीढ़ी तथा इंग्लैंड से अंग्रेज़ी माध्यम से क़ुरान संबंधित विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने वाली सामिया लोकात पुनः अपनी जड़ की ओर लौटने और दूसरों को लौटाने की प्रेरणा से हिंदी के प्रति आकृष्ट हुई थी। गुजरात से रियूनियन में ब्याही अंग्रेज़ी अध्यापिका पूजा अम्रतलाल, पॉन्डिचेरी से रियूनियन में ब्याहा तमील फ्रेंच एवं हिंदी भाषी भारती सारंगम जैसे छात्रों की कक्षा में उपस्थिति ने नए समरस, पारंपरिक हिंदी कक्षा को नया आयाम, नई गति एवं स्फूर्ति प्रदान की। निस्संदेह इस चुनौतीपूर्ण प्रशिक्षण से सुखद एवं ज्ञानवर्द्धक अनुभव दोनों प्रशिक्षक तथा छात्रों को प्राप्त हुए।

प्रतिभागियों का मूल्यांकन भी हुआ। 17 अगस्त को संपन्न प्रमाण पत्र वितरण समारोह के अंतर्गत सें देनी नगरपालिका के महापौर ज़िलबेर आनेत, भारतीय वाणिज्यदूत श्री जार्ज राजू, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री बिजय मधू एवं निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल तथा सें देनी के कुछ एम.एल.ए. की उपस्थिति से, हिंदी भाषा की गरिमा और घनीभूत हुई। प्रशिक्षण की झलकियाँ आंटेन रेउनियों के जियोनिसिते कार्यक्रम के अंतर्गत दर्शायी गईं। स्थानीय पत्रों- ले जुर्नाल दे लिल दे ला रेउनियों (Le journal de l'île de la Reunion) और ले कोचिजिएं (le Quotidien) में महात्मा गांधी संस्थान द्वारा संपन्न इस महत प्रशिक्षण कार्य से संबंधित लेख भी प्रकाशित हुए।

ज़िलबेर आनेत, भारतीय वाणिज्यदूत श्री जार्ज राजू, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री बिजय मधू एवं निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल, डॉ. राजरानी गोबिन तथा सें देनी के कुछ एम.एल.ए. सहित कुछ हिंदी शिक्षक

निस्संदेह हिंदी के माध्यम से भारतीय अस्मिता का बोध रियूनियन में बढ़ने लगा है। 15 अगस्त 2013 को फ्रांस विभाग रियूनियन में भारतीय वाणिज्यदूत के निवास स्थल सेंत मेरी में जब तिरंगा झंडा नीले नभ में फहराया गया तब राष्ट्रीय गान एवं हिंदी गीतों की गूंज से समस्त वातावरण प्रफुल्लित हो उठा। भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ही रात्रि में सें देनी नगरपालिका के सभागार में भारतीय वाणिज्य दूतावास एवं नगरपालिका के मिले-जुले सहयोग से पहली बार आयोजित भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत जब हिंदी गानों की सराहना हुई, तब भी हिंदी के विश्वजनीन रूप का आभास हुआ।

डॉ. राजरानी गोबिन,
वरिष्ठ प्राध्यापिका
महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस

यू.के. हिंदी समिति द्वारा हिंदी दिवस तथा बीसवाँ अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

17 अगस्त 2013 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद-भारत सरकार एवं भारतीय उच्चायोग, लंदन के तत्वावधान में यू.के. हिंदी समिति द्वारा आयोजित 20वां अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन लंदन के नेहरू केन्द्र में पूरी भव्यता के साथ संपन्न हुआ। कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में भारत के उप उच्चायुक्त डॉ. वीरेंदर पाल ने आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि 1994 में आरंभ हुई कवि सम्मेलन की यह परंपरा आज तक अपनी पूरी गरिमा के साथ चली आ रही है। इस अवसर पर डॉ. पाल ने भारतीय उच्चायोग द्वारा सभी हिंदी संस्थाओं को पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

अतिथियों का स्वागत करते हुए नेहरू केन्द्र के उप निदेशक श्री गौरीशंकर ने कवि-सम्मेलनों के आयोजन में नेहरू केन्द्र की भूमिका से सभा को अवगत कराया, नेहरू केंद्र के पहले निदेशक श्री गोपालकृष्ण गांधी से लेकर अब तक के सभी निदेशकों का सहयोग इन आयोजनों में रहा है। इस अवसर पर नेहरू केन्द्र की निदेशक सुश्री संगीता बहादुर ने अपने संदेश में सभी कवियों और अतिथियों का नेहरू केन्द्र में स्वागत किया और कहा कि वह चाहती है कि भविष्य में यह आयोजन सदा नेहरू केन्द्र में ही आयोजित होता रहे।

ब्रिटेन में अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों की परंपरा के संस्थापक एवं यू.के. हिंदी समिति के अध्यक्ष डॉ. पद्मेश गुप्त ने 20 वर्षों के संस्मरणों को याद करते हुए, कवि सम्मेलनों की इस ऐतिहासिक यात्रा को, इस परंपरा के प्रेरणा स्रोत यू.के. के पूर्व उच्चायुक्त स्वर्गीय डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी और कमला सिंघवी को समर्पित किया। उन्होंने अपने संबोधन में भारत के राजनेता एवं कवि श्री केशरीनाथ त्रिपाठी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बताया कि पिछले 15 वर्षों से वह उत्तर प्रदेश के दो कवियों को प्रति वर्ष अपने सौजन्य से इन वार्षिक आयोजनों में भेजते रहे हैं और लंदन में यू.के. हिंदी समिति द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन की 10वीं बार अध्यक्षता कर रहे हैं।

हिंदी समिति की वरिष्ठ सदस्या एवं लेखिका श्रीमती उषा राजे ने अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों के इतिहास का संक्षिप्त परिचय देते हुए भारत से आए सभी कवियों को मंच पर आमंत्रित किया जिनका स्वागत वातायन की अध्यक्षा सुश्री दिव्या माथुर एवं कवि सम्मेलन के संयोजक डॉ. पियूष गोयल ने किया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री केशरीनाथ त्रिपाठी ने एक भारतीय सैनिक और उसके परिवार की व्यथा का चित्रात्मक वर्णन देते हुए अत्यंत संवेदनशील कविता का पाठ किया। श्री तेज नारायण शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए अपनी व्यंग्यात्मक रचना प्रस्तुत की जिसे श्रोताओं ने पसंद किया।

इसके पश्चात श्री विज्ञान व्रत (ग़ज़ल व दोहे), सुश्री कविता किरण (वृद्धों की समस्याएँ), सुश्री ममता किरण (नवयुवतियों पर संवेदनशील कविताएँ व गीत) आदि ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। उत्तर प्रदेश से आए कुश चतुर्वेदी ने गरीबी पर आधारित भावनात्मक रचनाएँ प्रस्तुत कीं। अमेरिका से पधारी श्रीमती अनीता कपूर ने प्रवासी भावनाओं को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया।

अंत में भारतीय उच्चायोग के हिंदी एवं संस्कृति अधिकारी श्री बिनोद कुमार ने सभी अतिथि कवियों, आयोजकों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ब्रिटेन में कवि सम्मेलनों का हिंदी के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस आयोजन में भारतीय उच्चायोग के श्री पी.आर. सिंह, कवि सम्मेलनों के राष्ट्रीय संयोजक के.बी.एल. सक्सेना, नाटिंघम की काव्यरंग संस्था से श्रीमती जय वर्मा, महिपाल वर्मा, कृति यू.के. मिडलैंड्स से डॉ. के.के. श्रीवास्तव, तितिक्षा शाह, कैलाश बुधवार, ललित मोहन जोशी, तेजेन्द्र शर्मा, डॉ. श्याम मनोहर पांडे तथा अन्य अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने भाग लिया। इस सुअवसर पर यू.के. हिंदी समिति द्वारा लंदन में हुए कवि सम्मेलनों के इतिहास पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया गया।

डॉ. पियूष गोयल की रिपोर्ट

'काव्यरंग' द्वारा कवि-सम्मेलन व सम्मान

प्रतिवर्ष भारतीय उच्चायोग, यू.के. तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) के संयुक्त तत्वावधान में केशरी नाथ त्रिपाठी के नेतृत्व में 5 कवि अगस्त माह में ब्रिटेन आते हैं और यहाँ की स्थानीय संस्थाओं के संयोजकत्व में अलग-अलग नगरों में कवि सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष ये कार्यक्रम 14 अगस्त से 27 अगस्त तक आयोजित हुए। लगभग 2 सप्ताह के वार्षिक कार्यक्रम के लिए इस वर्ष यहाँ आने वाले कवि थे- श्री केशरीनाथ त्रिपाठी, ममता किरण, कविता किरण, कुश चतुर्वेदी, तेज नारायण शर्मा और विज्ञान व्रत।

इसी क्रम का अंतिम कवि सम्मेलन नोटिंघम नगर में काव्यरंग संस्था के स्थानीय संयोजकत्व में 26 अगस्त को आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता नोटिंघम के शेरिफ़ ने की तथा मुख्य अतिथि थे भारतीय उच्चायोग के मंत्री श्री एस.एस. सिद्धू। सम्मेलन से पूर्व जय वर्मा द्वारा कवि परिचय हुआ और उनका स्वागत ज्योति धर द्वारा तिलक लगाकर किया गया। 'काव्यरंग' के दस वर्ष पूर्ण होने के विशेष अवसर के कारण कार्यक्रम का शुभारंभ 10 दीपों को प्रज्वलित कर किया गया।

प्रति वर्ष संस्था अपने इस वार्षिक कवि सम्मेलन में किसी एक वरिष्ठ हिंदी रचनाकार को सम्मानित भी करती है। इस वर्ष यह सम्मान कॉवेंट्री निवासी वरिष्ठ ग़ज़लकार प्राण शर्मा तथा नोटिंघम निवासी प्रो. हरमिन्दर दुआ को मुख्य अतिथियों के हाथ से शॉल, प्रशस्ति पत्र व राशि भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके पश्चात डॉ. श्रीहर्ष शर्मा की पुस्तक 'तेरी धुन और मेरे गीत' का लोकार्पण अतिथियों द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रथम सत्र रवि महाजन ने संचालित किया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कुश चतुर्वेदी, ममता किरण, विज्ञानव्रत, तेजनारायण, कविता किरण एवं केशरीनाथ जी ने काव्यपाठ किया। कवि सम्मेलन का संचालन जुगनू महाजन द्वारा किया गया। संस्था की ओर से भारत से पधारे कवियों को भेंट देकर उनका सत्कार किया गया। हरमिन्दर दुआ द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डॉ. कविता वाचक्नवी की रिपोर्ट

यूरोप में आधुनिक हिंदी शिविर

गत वर्षों में आयोजित संस्कृत और ब्रजभाषा शिविरों की तरह रोमानिया के ऐतिहासिक नगर चीकसैरेदॉ के सपिएंत्सियाँ विश्वविद्यालय में आधुनिक हिंदी शिविर का आयोजन किया गया ।

यह शिविर विश्वविद्यालय के परिसर में 19-30 अगस्त के बीच आयोजित किया गया। शिविर के अंतर्गत सुषम बेदी की कहानी 'अवसान', उपन्यास 'हवन' और 'मैंने नाता तोड़ा' के अंश , असगर वजाहत के नाटक 'जिस लाहौर नइ देख्या जो जम्याइ नइ', 'खाली जगह' उपन्यास के कुछ अंश, कुणाल सिंह की कहानी 'प्रेमकथा' में मोजे की भूमिका और राहुल सांकृत्यायन की कहानी 'सुदास' का विश्लेषण और अनुवाद किया गया।

स्विट्ज़रलैण्ड के लोजन विश्वविद्यालय के डॉ. निकोला पोजा ने गीतांजली श्री का अनुवाद प्रस्तुत किया। इटली के तोरीनों (ट्चुरिन) विश्वविद्यालय की डॉ. आलेस्संद्रा कोनसोलारो ने कुणाल सिंह की कहानी 'प्रेमकथा' में मोजे की भूमिका पर कार्य किया।

हंगरी के बुदापैश्त विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर मारिया नेज्यैशि ने 'जिस लाहौर नइ देख्या जो जम्याइ नइ' का हंगेरियन अनुवाद किया। उन्होंने नाटक की हिंदी-अंग्रेज़ी शब्दावली बना भेजी है।

इस आयोजन में हिंदी के दो वरिष्ठ लेखक सुषम बेदी और असगर वजाहत ने अपनी रचनाओं के अनुवाद की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके कारण अनुवाद की चुनौतियों और मूल पाठ की बहुस्तरीय व्याख्या को समझने और अनुवाद करने में मदद मिली।

इस आयोजन के संयोजक डॉ. इमरै बंघॉ के अनुसार शिविर का उद्देश्य हिंदी के छात्रों और युवा विद्वानों को प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाओं को पढ़ने और लेखकों से उनकी चर्चा करने का औपचारिक मौका देना है। कार्यक्रम में रोमानिया, भारत, इटली, पोलैंड, स्विट्ज़रलैण्ड, अमरीका और हंगरी से भी लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की एक विशेषता यह रही कि इसके कुछ सत्र कक्षा की सीमाओं से मुक्त भी रहे जिनका आयोजन रवींद्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन की तरह कक्षा से बाहर, प्राकृतिक स्थलों पर किया गया। इन स्थलों में करपेश्ज़ियन पहाड़ों के अंतर्गत शोम्यो पहाड़, हरगितॉ की तरह, सेंट ऐन्न झील आदि सुंदर स्थल आते हैं।

डॉ. जोल्तान मको
डीन, सपिएंत्सियॉ हंगेरियन विश्वविद्यालय, रोमानिया

फ़ों जी साक आर्य युवक संघ द्वारा हिंदी प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण

रविवार 14 जुलाई 2013 को मॉरीशस के फ़ों जी साक गॉव में फ़ों जी साक आर्य युवक संघ की पहली वर्षगाँठ मनाई गई। इस अवसर पर मॉरीशस के स्वास्थ्य मंत्री श्री लोमेश बंधू, पंडित मणिकचंद बुधू, मॉरीशस आर्य युवक संघ की प्रधान श्रीमती पूनम सुकन तीलकधारी, श्री गिरजानंद तिलक, पाँप्लेमुस ज़िला परिषद के प्रधान आदि महानुभाव उपस्थित थे।

यज्ञ अनुष्ठान के पश्चात फ़ों जी साक आर्य युवक संघ की प्रधान सुश्री रामझीतन करिश्मा देवी ने स्वागत भाषण दिया।

स्वास्थ्य मंत्री श्री लोमेश बंधू ने फ़ों जी साक आर्य युवक संघ के विगत कार्यक्रमों एवं आयोजनों पर अपने विचार व्यक्त किए तथा इस संस्था के सुदृढ़ कदमों व कार्यों के लिए इसे हृदय की गहराई से बधाई व शुभकामनाएँ प्रकट कीं।

इस अवसर पर संघ द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। युवा मंत्रालय के अधिकारियों के संचालन में 12 सप्ताहों तक आयोजित पीय एजुकेटर कोर्स के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए।

मास्को में 'एक शाम कविता के नाम'

मास्को में 20 सितंबर, 2013 को विश्वविद्यालय कॉन्सर्ट हॉल में हिंदी के प्रसिद्ध हास्य कवि अशोक चक्रधर और ग़ज़लकार नवाज़ देवबन्दी ने 'हिंदुस्तानी समाज' रूसी-भारतीयों के संगठन के निमंत्रण पर पधारकर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। (ज्ञातव्य है कि देवबंदी जी की ग़ज़लें प्रसिद्ध गायक स्वर्गीय जगजीत सिंह भी गा चुके हैं।)

इस अवसर पर केरल से आए मलयालम के प्रसिद्ध कवि ओ.एन.वी. कुरूप भी उपस्थित थे जिनकी पुस्तक 'एक सूर्य, एक आकाश, एक पृथ्वी' का विमोचन किया गया। कुरूप जी ने कई फ़िल्मों, टेलीविजन और रेडियो प्रसारणों के लिए अनगिनत गीत भी लिखे हैं।

'हिंदुस्तानी समाज' के संस्थापकों में से एक डॉ. मदनलाल मधु ने कवियों का स्वागत किया और उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके साहित्य के वर्ण्य विषय पर भी जानकारी दी।

इस काव्य संध्या की सफ़लता में हिंदुस्तानी समाज के अध्यक्ष श्री योगेन्द्र नागपाल, उपाध्यक्ष श्री आनंद शेखर सिंह और श्री रेघु पिल्लाई, महासचिव श्री संजय शिराली तथा अन्य पदाधिकारियों और सदस्यों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

'हिंदुस्तानी समाज' की स्थापना सन् 1957 में की गई थी। भारत के नागरिकों का यह संगठन उस समय से लेकर आज तक भारतीय दूतावास के सहयोग से सांस्कृतिक गतिविधियों को अंजाम दे रहा है जिनका उद्देश्य रूस में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है और दोनों देशों के लोगों के बीच मैत्री को सुदृढ़ बनाना है।

ब्रजेन्द्र त्रिपाठी की पुस्तक 'साहित्य और परिवेश' का लोकार्पण संपन्न

साहित्य अकादेमी के सभागार में 26 अगस्त 2013 को कवि/संपादक ब्रजेन्द्र त्रिपाठी की गद्य पुस्तक 'साहित्य एवं परिवेश का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ। समारोह के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी थे तथा विशिष्ट अतिथि गोपाल राय थे। मुख्य वक्ता के रूप में अजय तिवारी एवं विशिष्ट वक्ता के रूप में ज्योतिश जोषी, जितेन्द्र श्रीवास्तव एवं नीरज कुमार उपस्थित थे। अध्यक्ष श्री तिवारी ने कहा कि पुस्तक में संकलित विषय इतने विविध हैं कि उनपर अलग से कई पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। यह पुस्तक संक्षेप में साहित्य के विभिन्न पक्षों पर अपने मंतव्य व्यक्त करने की कोशिश है।

विशिष्ट वक्ता ज्योतिश जोषी ने कहा कि यह पुस्तक भारतीय संस्कृति की मनीषा को साझा करती है और एक उत्कृष्ट रचना के रूप में सामने आती है। इन निबंधों में भारतीय संस्कृति के क्षरण पर गहरी चिंता प्रकट की गई है। इस प्रकार जितेन्द्र श्रीवास्तव, नीरज कुमार आदि ने अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव, अजित कुमार, रमणिका गुप्ता, नरेन्द्र मोहन आदि लेखक-पत्रकार भारी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन ओम निश्चल ने किया। पुस्तक का प्रकाशन यश पब्लिकेशंस, दिल्ली से हुआ।

अजय कुमार शर्मा की रिपोर्ट

जापानी कॉमिक नीरव संध्या का शहर, साकुरा का दर्द का हिंदी अनुवाद

तोमोको किकुचि

दो वर्ष पूर्व तोमोको किकुचि ने सुप्रसिद्ध जापानी सचित्र पुस्तक 'हिरोशिमा का दर्द' का हिंदी अनुवाद किया था, जो छोटे बच्चों को परमाणु बम की त्रासदी के बारे में बताने के लिए सर्वोत्तम पुस्तक है। उसके बाद उन्होंने सोचा कि उसी संदेश को भारत के युवा पाठकों तक कैसे पहुँचाया जाए। बहुत बार युवा पीढ़ी युद्ध या विश्वशांति के विषय से विमुख रहती है। उन दिनों उन्हें संयोग से जापानी कॉमिक 'नीरव संध्या का शहर, साकुरा का देश' का परिचय मिला, जो हिरोशिमा त्रासदी पर आधारित है और जिसे जापान में कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। 2004 में जापान में प्रकाशित इस कॉमिक ने उन्हें सहसा आकर्षित किया और उन्हें लगा कि कॉमिक्स का रूप भारतीय जवानों को भी ज़रूर आकर्षित करेगा। उन्होंने इसका जापानी से हिंदी में सीधा अनुवाद किया जो जापानी कॉमिक्स के संदर्भ में पहली कोशिश है।

वैसे ही भारत में जापानी कॉमिक्स का हिंदी अनुवाद बहुत कम हुआ है और यहाँ कॉमिक्स को छोटे बच्चों की मानी जाती है, परंतु आजकल भारतीय युवाओं के बीच जापानी कॉमिक्स की लोकप्रियता बढ़ रही है। असल में जापानी कॉमिक्स में मानव जीवन से संबंधित हर किसी विषय को उठाया जाता है। मसलन इतिहास, राजनीति, कला, विज्ञान, संस्कृति, समाज, व्यवसाय, प्रेम, व्यंजन, मनोरंजन, इत्यादि पाठकों को ध्यान में रखकर कहानी लिखी जाती है।

जापान फ़ाउंडेशन की सहयोग योजना के तहत वाणी प्रकाशन से प्रकाशित इस पुस्तक का लोकार्पण गत 6 अगस्त 2013 को जापान फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली में हुआ। मुसलाधार वर्षा के बावजूद लोकार्पण समारोह में लगभग 100 लोग पधारे थे। उपस्थित युवकों की दिलचस्पी देखकर खुशी की लहर छा गई थी।

जापान के मूल प्रकाशक 'फुताबाशा' ने इस अवसर पर कॉमिक्स के 30 मूल चित्रों को यहाँ भेजा था और उन चित्रों की प्रदर्शनी भी जापान फाउंडेशन में 31 अगस्त तक जारी रही। इस प्रदर्शनी में लगभग 900 दर्शक आए, जिनमें अधिकांशत: विद्यार्थी थे। 9 सरकारी पाठशालाओं से दसवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के 450 छात्र-छात्राएँ आए। तोमोको किकुचि सभी को प्रदर्शनी दिखाते हुए पुस्तक और परमाणु बम के बारे में विस्तार से बताया। 8 अगस्त को लेखिका नई दिल्ली के सलवान पाठशाला में इस पुस्तक का परिचय देने गई, जहाँ 'विश्वशांति' विषय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ और 10 पाठशालाओं के 120 विद्यार्थियों ने उसमें भाग लिया। उन लोगों ने संगीत, कविता पाठ, नृत्य आदि के माध्यम से विश्वशांति, आतंकवाद का विरोध, स्त्री-शिक्षा, पुरुष-स्त्री की समानता आदि विभिन्न सामाजिक विषयों को उजागर किया। वहाँ तोमोको किकुचि ने देखा कि उन लोगों के मन में एक महत्वपूर्ण जागरूकता का उदय हो रहा था। ऐसे में छात्र-छात्राओं को इस पुस्तक का परिचय दे पाना गर्व की बात है।

11 अगस्त को जापान फ़ाउंडेशन में जापानी और भारतीय युवकों के लिए कार्यक्रम का आयोजन हुआ। हिरोशिमा के गैर सरकारी संगठन 'इंडो चाय क्लब हिरोशिमा' में 7 कॉलिज के विद्यार्थी गण आए थे। मीराम्बिका स्कूल के 17 ट्रेनी शिक्षक और मद्रास इंटरनेशनल स्कूल के दसवीं एवं ग्यारहवीं कक्षाओं के छात्र गण उपस्थित थे। हिरोशिमा की एक शिक्षिका ने अपनी दादी के बारे में बताया, जो परमाणु बम से त्रस्त हुई थीं। उन्होंने बताया कि "मुझे परमाणु बम का साक्षात अनुभव नहीं हुआ, फिर भी मेरा जीवन मेरी दादी के जीवन से जुड़ा हुआ है, इसलिए हमें युद्ध और परमाणु बम के बारे में सीखना चाहिए, खुद उसके बारे में सोचना चाहिए और दूसरों को बताना चाहिए। युद्ध तब शुरू होता है, जब देश के कुछ अधिकारी लोग आम जनता के जीवन की उपेक्षा करने लगते हैं। हिरोशिमा और नागासाकी में उस समय 2 लाख लोगों की मौत हुई। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि उन प्रत्येक 2 लाख इन्सानों के पास परिवार था, मित्र थे और अपना जीवन था।"

भारत में हिंदी वक्ता अंग्रेज़ी वक्ता से अधिक है और हिंदी न केवल उच्च वर्ग की भाषा है, बल्कि मध्य और निम्न वर्ग के लोगों की भी है। विश्वशांति के संदेश को अंग्रेज़ी बोलनेवाले उच्च वर्ग के अतिरिक्त विभिन्न वर्गों के लोगों तक पहुँचाने के लिए इस पुस्तक के हिंदी अनुवाद का बड़ा योगदान होगा। इसका प्रकाशन भारत और जापान के सांस्कृतिक संबंध के इतिहास में विशेष रूप से याद किया जाएगा और जापान प्रेमी भारतीय पाठक इस पुस्तक को अवश्य पसंद करेंगे।

तोमोको किकुचि की रिपोर्ट

तेजेन्द्र शर्मा को प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान

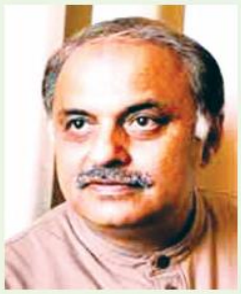

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान वर्ष 2012 के लिए ब्रिटेन के कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा को प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान प्रदान करेगा। संस्थान के निदेशक सुधाकर अदीब ने बताया कि पुरस्कार निर्णय समिति की बैठक संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह की अध्यक्षता में हुई। इस पुरस्कार के तहत दो लाख रुपए की धनराशि प्रदान की जाती है। तेजेन्द्र शर्मा के अब तक आठ कहानी संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कहानियाँ अंग्रेज़ी, पंजाबी, उर्दू, नेपाली, मराठी, गुजराती, उड़िया एवं चेक भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। उन्होंने दूरदर्शन के लिए शांति सीरियल का लेखन भी किया है। अन्नु कपूर निर्देशित फ़िल्म अभय में तेजेन्द्र शर्मा ने नाना पाटेकर के साथ अभिनय के जौहर भी दिखाए हैं। तेजेन्द्र शर्मा ने यमुना नगर (हरियाणा) एवं मुंबई में प्रवासी साहित्य सम्मेलनों का आयोजन भी किया है। कथा यू.के. संस्था के महासचिव तेजेन्द्र शर्मा हर साल ब्रिटेन की संसद के हाउस ऑफ़ कॉमन्स में अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान का आयोजन करते हैं। इससे पहले उन्हें महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी, हरियाणा साहित्य अकादमी एवं भारतीय उच्चायोग, लन्दन का हरिवंशराय बच्चन सम्मान मिल चुके हैं।

सृजनगाथा से साभार

हिंदी दिवस के अवसर पर नीरज, बुद्धिनाथ मिश्र सहित कई साहित्यकार सम्मानित

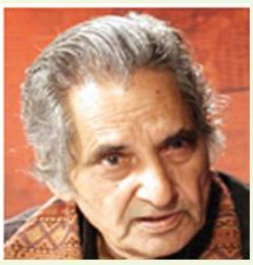

उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत के जाने-माने गीतकार गोपाल दास नीरज को हिंदी दिवस के अवसर पर भारत-भारती सम्मान से सम्मानित किया। हिंदी और मैथिली के वरिष्ठ कवि डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र को हिंदी दिवस के अवसर पर लखनऊ में आयोजित एक भव्य समारोह में उ.प्र. के मुख्य मंत्री श्री अखिलेश यादव ने 'साहित्य भूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया। कार्यक्रम में अखिलेश यादव, मुलायम सिंह सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रो. चौथी राम यादव को लोहिया साहित्य सम्मान, प्रो. सोम ठाकुर को हिंदी गौरव सम्मान, मन्नू भंडारी को महात्मा गांधी साहित्य सम्मान, डॉ. बलदेव बंशी को पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्मान, अशोक चक्रधर को विद्या भूषण तथा भारत के विभिन्न भागों से आए साहित्यकारों को 60 से अधिक सम्मान दिए गए। इस उपलक्ष्य में शाल, ताम्रपत्र और दो लाख रुपए की धनराशि अर्पित की गई। उ.प्र. हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि दुनिया की सभी भाषाओं में कविता का उद्भव पहले हुआ, गद्य का विकास बाद में। सदियों से समाज को सौमनस्य की दिशा कविता ही देती रही है। इस तरह मुख्य अतिथि श्री मुलायम सिंह तथा मंत्री अखिलेश यादव ने भी अपने मूल्यवान विचार प्रस्तुत किए।

साभार – जानोदुनिया.टीवी; पूर्वाभास.इन

गोइन्का पुरस्कार व सम्मान समारोह हैदराबाद में संपन्न

पुरस्कृत साहित्यकार व पत्रकार

दिनांक 11 अगस्त हैदराबाद के एन.टी.आर. कलामंदिरम् में कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन द्वारा आयोजित वरिष्ठ तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकारों एवं हिंदी पत्रकारों के सम्मानार्थ समारोह में कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन के प्रबंध नयासी श्री सह्यामसुंदर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों और पत्रकारों के योगदान को सराहा व संस्था का परिचय दिया।

आंध्र प्रदेश के तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकारों के लिए इक्कीस हज़ार रुपये का 'गीतादेवी गोइन्का हिंदी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार 2013' डॉ. जे.एल. रेड्डी को उनकी कृति 'पुराण प्रलापम्' के लिए दिया गया। आंध्र प्रदेश के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकारों के सम्मान में घोषित 'भाभीश्री रमादेवी गोइन्का हिंदी साहित्य सम्मान 2013' से वरिष्ठ साहित्यकार श्री ऋषभदेव शर्मा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही आंध्र प्रदेश के हिंदी पत्रकारिता जगत के वरिष्ठ पत्रकारों के सम्मानार्थ घोषित 'श्री मुनींद्र पत्रकारिता सम्मान' से हैदराबाद से प्रकाशित प्रमुख हिंदी दैनिक 'मिलाप' के कार्यकारी संपादक श्री रवि श्रीवास्तव को सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि 'भास्वर भारत मासिक पत्रिका' के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने सम्मानमूर्ति साहित्यकारों का अभिनन्दन किया। विशेष अतिथि क्षेत्रीय 'निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद' के प्रो. हेमराज मीणा ने साहित्यिक गतिविधियों के लिए न्यास को बधाई दी।

कमलेश यादव की रिपोर्ट

साहित्य विचार पर परिचर्चा

जयपुर के विद्याधर नगर के हॉट चिल्ली रेस्तरां में भारतीय विचार मंच और नेताजी सुभाष विचार मंच के संयुक्त तत्वावधान में और पं. भंवरलाल पारीख की अध्यक्षता में एक साहित्य परिचर्चा का आयोजन किया गया।

भारत के नवयुवकों में स्फूर्ति लाने और नव जागरण के ध्येय से भारतीय विचार मंच के तत्वावधान में देश भर में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की श्रेणी में यहाँ आयोजित इस परिचर्चा में सर्वप्रथम नेताजी सुभाष विचार मंच के राजस्थान चैप्टर के संयोजक श्री हरवंश लाल भूटानी ने सभी अभ्यागतों का माल्यार्पण कर स्वागत किया और प्रतिभागियों के संक्षिप्त परिचय दिये।

इसके उपरांत भारतीय विचार मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. विश्रांत वसिष्ठ ने बताया कि किस प्रकार रचनाकारों को छायावाद के भंवरजाल से निकालने में प्रगतिशील लेखक संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। उन्होंने अपने विश्लेषण में तमिल, तेलगू आदि बुद्धिजीवियों के भी उदाहरण देकर बताया कि किस प्रकार राजनेता लोग रचनाकारों की सरलता का लाभ उठाते आ रहे हैं।

कार्यक्रम का संचालन श्री हरवंशलाल भूटानी ने किया जबकि इसे सफ़ल और सार्थक बनाने में श्री सुमित कुमार मीणा, यादवेन्द्र चेजारा और जैन ने सहयोग दिया।

सुमित कुमार मीणा की रिपोर्ट

कथाञ्जलि: पर चर्चा-गोष्ठी का आयोजन

30 जुलाई 2013 को देववाणी परिषद् दिल्ली के 117 वें ग्रंथ के रूप में प्रकाशित 'कथाञ्जलि' (हिंदी मूल लघुकथाओं सहित संस्कृत रूपान्तरण) पर केन्द्रित चर्चा-गोष्ठी का आयोजन नर्मदा विश्वनाथ प्रकाशन, इन्दौर ने प्रीतमलाल दुआ सभागार में किया। कृति में सुप्रसिद्ध लघुकथाकार डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल की पचपन हिंदी लघुकथाओं का अनुवाद प्रो. अर्चना जोशी द्वारा संस्कृत भाषा में किया गया। इस आजोयन की अध्यक्षता करते हुए महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति डॉ. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि संस्कृत की अन्योक्तियाँ, अर्थान्तरन्यास, मुक्तक कभी पढ़े जाते थे। वे सब डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल की लघुकथाओं में समसामयिक संदर्भों में प्रतिबिम्बित हैं। वस्तुत: एक बात को एक बार में कह देना ही लघुकथा है। डॉ. शुक्ल की लघुकथाओं में व्यंग्य, कथ्य, तथ्य और प्रभाव हैं।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ.ए.ए.अब्बासी ने मुख्य अतिथि के रूप में उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि लघुकथा अपने संक्षिप्त आकार और तीखे प्रहार के कारण लोकप्रियता के नये-नये सोपान ग्रहण कर रही है। विशिष्ट अतिथि के रूप में सिन्धिया प्राच्यविद्या शोध प्रतिष्ठान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के निदेशक डॉ. बालकृष्ण शर्मा ने अनुवाद की प्रशंसा करते हुए कहा कि जब भी किसी भाषान्तर में किसी रचना का अनुवाद होता है तो वह निश्चित तौर पर एक तथ्य प्रमाणित करता है कि उसकी स्वीकार्यता का क्षेत्र, उसकी परिधि व्यापक हो रही है।

लेखक एवं चिन्तक अशोक वक्त ने अनुवाद के महत्व एवं प्रासंगिकता संदर्भित चर्चा कर इसे साहस का काम बताया। 'छ: शब्द' के संपादक प्रो. पुरुषोत्तम दुबे ने कहा कि संस्कृत में अनूदित यह हिंदी का पहला लघुकथा संग्रह है। डॉ. शुक्ल की लघुकथाएँ अपने प्रतीकों, बिम्बों, भाषा और संप्रेषणीयता के लिहाज़ से उत्कृष्ट है। व्यंग्य से उनकी मारक क्षमता बहुत बढ़ गयी है। कार्यक्रम के संयोजक नर्मदा विश्वनाथ प्रकाशन के बालकृष्ण जोशी ने सभी अतिथि साहित्य मनीषियों का पुष्पमाल्य, शाल, श्रीफल से स्वागत किया। इस अवसर पर लेखक के पिता महेन्द्रनाथ शुक्ल और माता श्रीमती आशारानी तथा कृति के आवरण पृष्ठ को तैयार करने वाले चित्रकार अभय वर्मा का भी सम्मान किया गया। आयोजन में श्री सूर्यकांत नागर, डॉ.शरद पगारे, डॉ.राजेंद्र मिश्र सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. साधना देवेश ने किया।

बालकृष्ण जोशी की रिपोर्ट

जेएन्यू में '1857 का महत्व' विषयक परिसंवाद और 'सुराज' नाटक की प्रस्तुति

30 अगस्त को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के ड्रामा क्लब के तत्वावधान में '1857 का महत्व' विषयक परिसंवाद और रंगश्री द्वारा देवेन्द्र चौबे के 1857 के शहीद कुंवर सिंह पर केन्द्रित नाटक का मंचन किया गया। परिसंवाद में जाने-माने आलोचक प्रो. मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि इतिहास जिनकी उपेक्षा करता है, साहित्य उन्हें उचित स्थान देता है। 1857 के संघर्ष के बारे में उन्होंने कहा कि इसमें अनगिनत लोगों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए कुर्बानियाँ दी थी, जो इतिहास में दर्ज नहीं हुई हैं। लेकिन उनको लोक साहित्य ने प्रतिष्ठित किया है। प्रो. पाण्डेय ने कहा कि लोक की स्मृति में मौजूद 1857 इस बात का प्रमाण है कि यह जन विद्रोह था। इतिहासकार प्रो. सुचेता महाजन ने कहा कि 1857 को कई तरह से देखा जाता है। एक तरफ़ उपनिवेशवादी इतिहासकारों ने इसकी अतिवादी व्याख्या की तो दूसरी ओर सावरकर ने। लेकिन आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उन व्याख्याओं से प्रभावित हुए बिना उसका नए स्रोतों और नए दृष्टिकोण के आलोक में विश्लेषण करें।

भारतीय भाषा केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. रामबक्ष ने कहा कि 1857 एक ऐसी घटना थी जिसका अपने प्रभावी संचार तंत्र के बावजूद अंग्रेज़ सरकार पूर्वानुमान नहीं कर पाई। उन्होंने कहा कि 1917 की रूस की बोल्शेविक क्रांति और सोवियत संघ का विघटन भी ऐसी ही घटनाएँ थीं और ऐसी घटनाओं के प्रभाव दूरगामी होते हैं। आलोचक प्रो. रामबक्ष ने देवेन्द्र चौबे के नाटक 'सुराज' की बात करते हुए कहा कि 1857 से जुड़ी कहानियों को साहित्य में कलमबद्ध करने की आवश्यकता है। फ़ारसी के प्राध्यापक डॉ. अखलाक अहमद आहन ने फ़ारसी भाषा के स्रोतों पर बात करते हुए कहा कि आज 1857 के इतिहास लेखन में फ़ारसी स्रोतों का पूरा उपयोग नहीं हो पाया है जबकि फ़ारसी उस दौर की भाषा थी और उसमें 1857 का पूरा इतिहास दर्ज है। इतिहासकार रश्मि चौधरी ने जगदीशपुर में 1857 के दौरान कुंवरसिंह के नेतृत्व में हुए अंग्रेज़ों से हुए संघर्ष का महत्व रेखांकित करते हुए बताया कि जब मैंने कुंवरसिंह पर कार्य प्रारंभ किया, तो आश्चर्य हुआ कि मुख्यधारा के इतिहास में ऐसे नायकों का संघर्ष दर्ज नहीं है जबकि कुंवरसिंह जैसे योद्धाओं की उपस्थिति आज भी जनमानस में विद्यमान है। उन्होंने कहा कि हमें लोक के स्रोतों को केन्द्र में रखकर 1857 के पुनरावलोकन की आवश्यकता है। दूसरे सत्र में डॉ. देवेन्द्र चौबे ने लेखकीय वक्तव्य में नाटक 'सुराज' की रचना प्रक्रिया पर बात करते हुए कहा कि यह नाटक रचनाशीलता के ज़रिये इतिहास के पुनर्पाठ का एक प्रयास है। उन्होंने कहा कि 'सुराज' लिखने के लिए मैंने जगदीशपुर और इसके आस पास के इलाकों में भ्रमण किया और लोगों से बातचीत की। लोक मानस में दर्ज स्मृतियों के आधार पर ही इस नाटक का कथानक बुना गया है। नाटक का निर्देशन महेन्द्र प्रसाद सिंह ने किया। परिसंवाद के आरंभ में गणपत तेली ने स्वागत-वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन भारतीय भाषा केन्द्र के शोध छात्र विजय सिंह और धन्यवाद ज्ञापन भाषा संस्थान के कन्वीनर संदीप सौरभ ने किया।

शुभ्रा, संयोजक, ड्रामा क्लब, जेएन्यू

श्रद्धांजलि

नहीं रहे प्रो. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर

हिंदी भाषा व साहित्य के क्षेत्र में ऐतिसिक योगदान देने वाले प्रो. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर (कैंब्रिज विश्वविद्यालय) नहीं रहे। 19 अगस्त को उनका स्वर्गवास हो गया। हिंदी एवं संस्कृत के विद्वान स्टुअर्ट मैकग्रेगर के माता-पिता स्कॉटिश मूल के थे। उनका जन्म सन् 1929 में न्यूज़िलैण्ड में हुआ था। उनको बालपन में फ़िजी से प्रकाशित हिंदी के एक व्याकरण की प्रति किसी ने दी थी, जिसने उनके जीवन का रुख हिंदी की ओर मोड़ दिया। 1964 से 1997 तक वे कैंब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाते रहे। सर्वप्रथम 1959-60 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई करने वे भारत आए थे। उनका पीएच.डी. शोध 1968 में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ था, जिसका शीर्षक था 'The Language of Indrajit of Orchā – A Study of Early Braj Bhāsā Prose'। ध्यातव्य है कि इंद्रजीत स्वयं ब्रज भाषा के ख्यात कवि थे और वे ही प्रसिद्ध कवि केशवदास के संरक्षक भी थे। प्रो. मैकग्रेगर ने 'द ऑक्सफ़ोर्ड हिंदी-इंग्लिश डिक्शनरी' (1993), 'आउटलाइन ऑफ़ हिंदी ग्रामर विद एक्सरसाइज़ेज़' (1971), 'हिंदी लिटेरेचर ऑव द नाइनटींथ सेंचुरी ऐंड अर्ली ट्वेन्टीयथ सेंचुरी' (1974), आदि पुस्तकें व शोध-ग्रंथ लिखे जो हिंदी भाषा और साहित्य की अनमोल मोतियाँ हैं। उनके शब्दों में – ''हिंदी दुनिया की तीसरी भाषा है और पश्चिमी एशिया की बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। हम इस भाषा को हिंदी कहें, उर्दू कहें या हिंदुस्तानी कहें, कोई फर्क नहीं पड़ता। परंतु जब लिखने की बात होती है तो स्थिति बदल जाती है... यह जो नई हिंदी की शैली उभरकर आई है, इसमें एक ऐसी जीवंत शक्ति है जिसमें विकास की निहित संभावना है... वही उसे दुनिया की एक बेहद शक्तिशाली भाषा बनाती है।''

उषा राजे सक्सेना तथा कविता वाचक्नवी द्वारा प्रेषित सूचनाओं के आधार पर विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

फ़िल्म अभिनेता प्राण का निधन

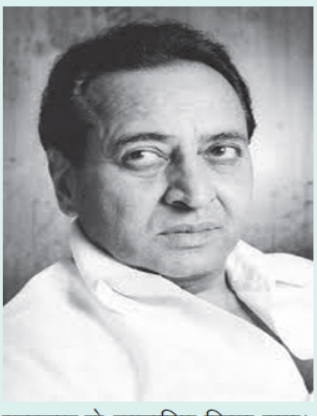

हिंदी सिनेमा के दिग्गज खलनायक और चरित्र अभिनेता प्राण नहीं रहे। सेहत बिगड़ने के कारण 93 वर्षीय प्राण को मुंबई के लीलावती अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहाँ उन्होंने अंतिम साँस ली। प्राण ने छह दशक के फ़िल्मी यात्रा में 400 से भी अधिक फ़िल्मों में कार्य किया। 'ज़ंजीर', 'राम और श्याम', 'उपकार', 'कश्मीर की कली', 'खानदान', 'हीर रांझा' आदि फ़िल्मों में उनकी भूमिकाएँ अब भी लोगों के ज़ेहन में ताज़ा हैं। उन्हें इसी वर्ष भारतीय सिनेमा के शताब्दी वर्ष में दादा साहेब फ़ाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 12 फ़रवरी, 1920 को दिल्ली में जन्मे प्राण कृष्ण सिकंद ने अपने दौर के लगभग सभी नायकों के साथ खलनायक की भूमिका निभाई। हर फ़िल्म में उन्होंने खलनायकी का एक नया रंग भरा। शब्दों को चबाकर बोलने से वे खतरनाक और दुष्ट लगते थे। लेकिन, जब मनोज कुमार ने 'उपकार' में उन्हें मस्त मौला मलंग की भूमिका दी तो उन्होंने अपनी ही छवि बदल दी। पहली बार निर्माता-निर्देशकों को लगा कि वे सहयोगी और चरित्र भूमिकाएँ भी निभा सकते हैं। अमिताभ बच्चन की ज़ंजीर में उन्होंने शेर खान की यादगार भूमिका की। अमिताभ जी के ही शब्दों में 'प्राण ने हिंदी सिनेमा को अपनी कलाकारी से प्राण दिया।'

सृजनगाथा से साभार

संपादकीय

चक्रव्यूह के द्वार खोलें अभिमन्यु आ रहे हैं

विश्व हिंदी समाचार के इस अंक के सम्पादकीय के केन्द्रीय विचार-बिन्दु का चयन करने में बहुत समय लगा। सचिवालय द्वारा मॉरीशस और उसके बाद दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी-आइ.सी.टी. की कार्यशालाओं की कड़ी का आयोजन, दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी शिक्षण के लिए संघर्ष करते हिंदी सैनिक, मदीबा के देश से निकलें तो हिंदी दिवस की वैश्विक गतिविधियाँ जो संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकारों से प्रतिवर्ष बढ़ रही हैं, नहीं तो मॉरीशस के प्रधान मंत्री का हिंदी के समर्थन में उद्घोष... हर विषय अनेक बातों की सम्भावना लेकर आया है।

इन सब के बीच मन आकर ठहरा ... अभिमन्यु पर।

इसलिए नहीं कि वे मॉरीशस के हैं... वैसे भी मॉरीशस की सीमाएँ उनकी प्रतिभा के सामने बहुत पहले समर्पण कर चुकी हैं।

इस विश्व-हिंदी-पुत्र को भारतीय साहित्य अकादमी ने मानद महत्तर सदस्यता (Honorary Fellowship) प्रदान किये जाने की घोषणा की है। अभी तक इस सूची में नॉबल पुरस्कार विजेता नायपॉल, मलयालम के प्रसिद्ध भाषाविद प्रो. रोणल्ड आशर, ग्रीस के डॉ. वासिलिस वित्साक्सिस, चीन के भारतविद जी ज़ियानलिन, रूस के भारतविद प्रो. चेलिशेव, गीता विशेषज्ञ प्रो. एड्वर्ड डिमॉक जूनियर, संस्कृतज्ञ प्रो. डेनियल इंगल्स, चेक गणराज्य के प्रो. कामिल ज़्वेलेबिल और प्रथम सम्मानित सेनेगल के विद्वान लेओपोल्ड सेदर सेंघोर जैसे विश्वविख्यात नाम शामिल हैं।

इस विशिष्ट समूह में उपस्थित दिग्गजों को तथा इसमें प्रवेश के मापदण्डों को ध्यान में रखते हुए (स्वाभाविक रूप से हमारे नायक का नाम अभिमन्यु होने के कारण भी) यह कहने का मन हुआ कि इस महत्तर सदस्यता के साथ अभिमन्यु साहित्यिक चक्रव्यूह के बन्धन तोड़ते हुए उसमें पूरे सम्मान के साथ प्रवेश कर चुके हैं। आपके मन में चक्रव्यूह के इस रूपक को लेकर कोई भ्रम न रहे... इसका विस्तार करते हैं।

अभिमन्यु एक व्यक्ति नहीं है।

भारतीय साहित्य जगत हर दृष्टि से विशाल है। साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्यों की सूची में हिंदी साहित्यकारों के नामों पर ही एक नज़र डालें... इनमें सुमित्रानन्दन पन्त, जैनेन्द्र कुमार, महादेवी वर्मा, बाबा नागार्जुन, कृष्णा सोबती, भीष्म साहनी, रामविलास शर्मा, विष्णु प्रभाकर और निर्मल वर्मा आदि नाम, एक सहस्राब्दी लम्बी साहित्यिक परम्परा के उत्तराधिकारी साहित्यकारों के हैं। उनके अतिरिक्त जिन विदेशी साहित्यकारों-विद्वानों को मानद महत्तर सदस्यता दी जा चुकी है उनके यहाँ साहित्य अथवा अकाडिमीया की परम्परा 'बन्धुआ मज़दूरी' के माध्यम से बसाए गए मॉरीशस जैसे देशों में 'मानव सभ्यता' के इतिहास से भी लम्बी है।

इनके समक्ष 2013 में अपनी पहली हिंदी कविता और गद्य के प्रकाशन की शताब्दी मनाने वाले मॉरीशस के अभिमन्यु भी चौदह वर्ष के ही दिखते हैं। भारत के बाहर लगभग सौ वर्ष पूर्व आरम्भ हिंदी साहित्य की परम्परा का प्रथम पल्लव !

यहाँ एक बात और...

पिछले दिनों मॉरीशस के प्रसिद्ध लघुकथाकार रामदेव धुरन्धर की बातों से आभास हुआ कि एक ओर मूल हिंदी भाषी क्षेत्र के कुछ (सौभाग्य से 'कुछ' ही) 'विद्वानों' को शिकायत है कि भारत से बाहर के लेखकों अथवा विद्वानों को मात्र "भारत से बाहर का" होने के कारण सम्मान मिल जाता है और दूसरी ओर 'नए आप्रवास' के देशों के कुछ लेखकों ने यह बात छेड़ी है कि पारम्परिक रूप से 'आप्रवासी' कहे जाने वाले देशों के साहित्यकारों की तुलना में उनका लेखन अधिक महत्वपूर्ण है।

हिंदी के वैश्विक स्वरूप को पहचानने की असमर्थता से जनित इन आधारहीन मतभेदों में न पड़ते हुए भी एक बात अनिवार्यत: ध्यातव्य है कि इस चौदह वर्षीय अभिमन्यु को अपनी भाषा और साहित्य रचना का ज्ञान किन विशिष्ट परिस्थितियों में प्राप्त हुआ है। अर्जुन (भारतीय साहित्य) अपना ज्ञान सुभद्रा (भारतीय जनमानस) को ही दे रहे थे। अभिमन्यु ने तो इस जनमानस की संस्कृति और इतिहास के साथ अपने भावात्मक गर्भनाल सम्बन्ध के माध्यम से परोक्ष रूप से ही वह ज्ञान पाया। अन्यथा एक ऐसे देश में 'लाल पसीना' (यहाँ बात अनत जी की हो रही है इसलिए उदाहरण मॉरीशस से लिए गए हैं लेकिन याद रखें अभिमन्यु... विश्व-हिंदी-पुत्र हैं) की रचना कर पाना सामान्य बात नहीं है। उपलब्धि अधिक 'असामान्य' हो जाती है जब आप यह सोचें कि इनमें से कई लेखक दासता-तुल्य परिस्थितियों में रही कई पीढ़ियों के बाद 'क ख ग' पढ़ पाने वाली पहली पीढ़ी के हैं।

इन परिस्थितियों में परोक्ष रूप से प्राप्त परम्परा से जुड़कर उसकी शिखर पर अपना स्थान बना पाना 'चक्रव्यूह' में प्रवेश कर पाने से कम नहीं है। प्रतिभा आज भी आयु, काल और स्थान की सीमाओं में नहीं बन्धती।

प्रवेश कर गया अभिमन्यु चक्रव्यूह में! अब आगे क्या होगा... क्या होना चाहिए?

हिंदी भारत की भाषा रही है, है और रहेगी। स्वाभाविक रूप से केन्द्रबिन्दु के समीप (आंतरिक वृत में) ताप अधिक रहेगा... ऊर्जा अधिक रहेगी। और अभी तक जो परिस्थितियाँ रही हैं उनमें इस केन्द्रबिन्दु से दूर बाहरी वृत के लिए उस ऊर्जा की समतुल्यता कर पाना अभिमन्यु की प्रतिभा के लिए भी कठिन होगा। परन्तु सारी ऊर्जा का आंतरिक वृत में केन्द्रित रहना हिंदी के वैश्विक भाषा बनने की प्रक्रिया के लिए शुभ संकेत नहीं होंगे। इसीलिए अभी तक की परिस्थितियों को बदलना, वृत का विस्तार करना आवश्यक है। 'आप्रवासी संतान' के प्रति दया भाव से नहीं। अभिमन्यु को दया की आवश्यकता नहीं है। बनाना 'होगा', क्योंकि अनिवार्यता है। साहित्य अकादमी ने इस दिशा में जो कदम उठाया है वह महत्वपूर्ण, सराहनीय और अनुसरणीय है। बधाई!

लम्बी परम्परा और इतिहास के बावजूद वैश्विक भाषा बनने की प्रक्रिया में हिंदी अभी युवा है। इसके लिए हिंदी के समक्ष कोई साँचा या टेम्प्लेट भी नहीं। अभी तक वैश्विक भाषा का स्वरूप धारण करने वाली भाषा/भाषाएँ काल-भुगोल-राजनीति के अलग-अलग समीकरणों से गुज़री हैं। हिंदी के हिस्से जो समीकरण आया है उसकी अपनी विषिष्टताएँ हैं जिनकी सबसे महत्वपूर्ण मांग है - द्वार खुला रखने की। हिंदी से जुड़े हर क्षेत्र में - मानसिकता और प्रक्रिया दोनों दृष्टियों से।

विश्व-हिंदी को आगे अपने अन्य पुत्रों के लिए द्वार खोलने होंगे। अभिमन्यु के पीछे आने का सपना तक देखने वालों को पहचानकर उनका पोषण करना होगा। सुभद्रा को भी निद्रा निषिद्ध है। अपनी माटी और भारत भूमि दोनों से ऊर्जा प्राप्त होती रही तो कई और अभिमन्यु बनेंगे ... अवश्य।

इसलिए ... चक्रव्यूह का द्वार खुला रखें... अभिमन्यु आ रहे हैं !

गंगाधरसिंह सुखलाल 'गुलशन'
कार्यवाहक महासचिव

प्रधान संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी,
श्रीमती विजया सरजु, श्रीमती प्रीति नहुला,
श्री देव सीसा, श्रीमती उषा आकाजिया

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 676 1196
Fax (230) 676 1224
Email : info@vishwahindi.com
Website : www.vishwahindi.com

Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul – Pailles
Tel: 208 1317